ॐ श्री गणेशाय नमः

भविष्य निर्णय

द्विमासिक पत्रिका

(स्वास्थ्य, ज्योतिष, वास्तु, अध्यात्म, तंत्र-मंत्र चिंतन एवं बाल कहानी की द्विमासिक काल दर्शक)

वर्ष : 5 अंक : 1 अक्टूबर-नवम्बर 2014 मूल्य 15/-

संरक्षक
डा. चन्दन लाल पाराशर
डा. अशोक चतुर्वेदी
श्री महेश दत्त भारद्वाज
श्रीमती बिमला शर्मा

प्रधान सम्पादक
डा. महेश पारासर
फोन- 2525262, 2856666

सह-सम्पादक
डा.(श्रीमती) शोनू मेहरोत्रा
डा.(श्रीमती) रचना भारद्वाज
श्रीमती आयुषी पाराशर

वितरण प्रबन्धक
पवन मेहरोत्रा
डा. सतीश शर्मा

परामर्शदाता
डा. खेमचन्द्र शर्मा
डा. सतीश शर्मा
श्री महेश वर्मा
श्री जी. पी. एस. राघव

वित्त सलाहकार
श्री सतीश चन्द्र बंसल

आवरण सज्जा
ए. डी. ऑफसेट
आगरा फोन-9319053439

सदस्यता शुल्क
150/ दो वर्ष

ज्योतिः शास्त्रमनन्ताभ- स्कन्धत्रय समन्विवम् । सर्वलोकहितार्थाय, मुनिभिर्निर्मितं पुरा ।।
नमस्ते वास्तु देवाय, भू-शय्या शायिने प्रभो । कल्याणं कुरु मे नित्यं- सर्वथा सर्वदा विभो ।।
आचार्य चन्दन लाल पाराशर

क्या कहाँ

दीपावली पर अभिमन्त्रित पूजन सामिग्री एवं पूजन किट	डा. महेश पारासर	5
दीपावली और स्वप्न	डा. रचना के भारद्वाज	7
दीपावली पर श्री महालक्ष्मी जी को प्रसन्न करने के अद्वितीय सूत्र	डा. शोनू मेहरोत्रा	8
जगजननी भगवती महालक्ष्मी	डा. अरविन्द मिश्र	9
दीपावली पर धन आगमन के अचूक उपाय	पवन कुमार मेहरोत्रा	10
आर्थिक संकट एंव ऋण मुक्तिदायी प्रयोग	कविता बंसल	11
दीपावली पूजन विधि एवं दीपावली पूजन समय	पुष्पित पारासर	12
दीपावली एक उत्सव	श्री श्री भगवान पारासर	14
लक्ष्मी सिद्वि के सूत्र	पूनम दत्त	15
दीपावली पर किए जाने वाले अद्भुत टोटके	पं. अजय दत्ता	15
श्री सूक्त	विष्णु पाराशर	16
राम की श्री हैं सीता	श्री सुरेश अग्रवाल	16
मासिक राशिफल	पुष्पित पारासर	17–18
पूजा – सामिग्री		23

इस पत्रिका का कोई भी अंश या भाग किसी भी रूप में प्रकाशक की अनुमति के बिना, किसी अन्य के द्वारा उपयोग किया जाना वर्जित है। लेखकों के विचारों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। अतः लेखों के सम्बन्ध में उत्पन्न किसी भी प्रकार के विवाद हेतु पत्रिका परिवार उत्तरदायी नहीं होगा। इसके लिए मूल लेखक ही जिम्मेदार होगें। सम्पादक किसी भी लेख को बिना कारण सम्पादित/निरस्त किये जाने का अधिकार सुरक्षित रखते हैं। अप्रकाशित पांडुलिपियों की वापसी नहीं होगी। कॉपीराईट अधिकार भविष्य निर्णय में निहित रहेगा। हमारा न्यायालय क्षेत्राधिकार आगरा होगा।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक डा. महेश पारासर द्वारा Aydee Offset 42/140 एम, कृष्णा कुंज, हलवाई की बगीची, आगरा– से छपवाकर FF-6, भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह टाकीज के सामने, एम. जी. रोड़, आगरा से प्रकाशित। RNI No. UPHIN/2010/44791

दीपावली हेतु अभिमन्त्रिंत पूजन सामिग्री एवं पूजा किट

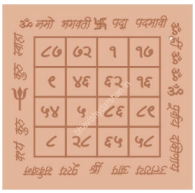

लक्ष्मी वाहन यंत्र

कौड़ी

धनियाँ

गोमती चक्र

गुंजा

लघु व एकांक्षी नारियल

काली हल्दी

कमल गट्टा

चावल

रुद्राक्ष

''प्रधान संपादक की कलम से''

डा. महेश पारासर
ज्योतिष महामहोपाध्याय, वास्तुशास्त्राचार्य,
ज्योतिष भूषण, ज्योतिष अलंकार,
ज्योतिष भास्कर, वराहमिहिर पद से सम्मानित
प्रबन्धक, ज्योतिष तंत्र शिक्षा प्रसार समिति

दीपावली पर अभिमन्त्रित पूजन सामिग्री एवं पूजन किट

प्रिय सदस्यो! आप सभी को **भविष्य दर्शन** की तरफ से दीपावली की हार्दिक शुभकामनाऐं। प्रतिवर्ष कार्तिक मास कृष्ण पक्ष की अमावस्या तिथि को दीपावली पर्व मनाया जाता है।

दीपावली पर्व पर घर घर में दीप जलाये जाते है। मिष्ठानादि से भोग लगाकर लक्ष्मी गणेश जी की पूजा करी जाती है। सभी वर्गो के लोग तथा अमीर गरीब हर स्थिती का व्यक्ति दीपावली पर लक्ष्मी आगमन की कामना करता है। विशेष रूप से व्यापारी वर्ग के लिए यह महत्वपूर्ण पर्व होता है तथा कर्ण वर्ग इस पर्व का इन्तजार नया कार्य प्रारम्भ करने के लिए करते हैं।

लक्ष्मी को चंचला कहा गया है लक्ष्मी जी एक जगह पर अधिक समय तक स्थिर नहीं रहती है। इसलिए दीपावली पर जन जन नाना प्रकार से पूजा अर्चना करके लक्ष्मी जी को स्थिर रखने की कामना करता है। लक्ष्मी जी को स्थिर रखने हेतु व प्राप्ति के लिए कुछ विशेष धन प्राप्ति सामिग्री की सिद्ध व अभिमन्त्रित पूजा किट तैयार की गयी है जिसे प्रयोग में लाकर आप लाभ प्राप्त सकते है।

पूजन हेतु पूजा किट में– रोली, चावल, बतासे, कलावा, सुपारी, लौग, इलायची, धूपबत्ती, कपूर, इत्र शीशी, जनेऊ, सिन्दूर आदि **धन लाभ हेतु तिजोरी में रखने हेतु अभिमन्त्रित सामिग्री**– यंत्र, कमलगट्टा, कौड़ी, गौमती चक्र, काली हल्दी, गुँजा, लघु नारियल, अक्षत, धनियाँ, सुपारी, रूद्राक्ष आदि।

उल्लू यंत्र– श्री लक्ष्मी जी का वाहन उल्लू है। उल्लू की सवारी कर के ही लक्ष्मी जी हर जगह भ्रमण करती हैं। सिद्ध श्री लक्ष्मी वाहन (उल्लू यंत्र) की स्थापना एवं पूजा करने से भगवती की असीम कृपा रहती है। सिद्ध श्री लक्ष्मी वाहन (उल्लू यंत्र) की पूजा करने से व्यापार एवं नौकरी में तरक्की, रुका हुआँ धन, किसी को दिया हुआँ धन वापस आने में मददगार होता हैं। इस यंत्र की स्थापना के साथ रोजाना पक्षियों को दाना अवश्य चुगायें। इस विधि को दैनिक दिनचर्या में लानें से लाभ की अनुभूति शत प्रतिशत होती हैं।

गुँजा– गुँजा को सिद्ध करके शुभ मुहुर्त में धन स्थान पर रखने से आर्थिक लाभ की प्राप्ति होती है एवं ऋण मुक्ति में भी लाभप्रद होता हैं।

गोमती चक्र– गोमती चक्र भगवान विष्णु जी का प्रतीक माना जाता है। अतः जहाँ विष्णु जी का आशीर्वाद है वहाँ लक्ष्मी जी का वास रहता है। यह चक्र लक्ष्मी जी को विशेष प्रिय है।

कौडी– कौडी को प्राचीन कालखण्ड में लक्ष्मी स्वरूप में ही प्रयोग किया जाता था। कौडी सिद्ध करके घर अथवा दुकान में रखने से लक्ष्मी जी की कृपा बनी रहती है।

काली हल्दी– काली हल्दी अभिमन्त्रित करके घर में स्थापित करने से बुरी नजरों से बचाव होता है। शुत्रओं पर विजय प्राप्त होती है तथा कार्य सिद्ध होते है।

कमलगटटा– लक्ष्मी जी को प्रसन्न करने हेतु कमल के बीज कमलगट्टों से उनका पूजन व हवन किया जाता है जिससे लक्ष्मी जी की कृपा बरसने लगती है।

लघु व एकांक्षी नारियल– यह दुर्लभ नारियल लक्ष्मी जी को अत्यंत प्रिय है घर में लाल कपड़े पर सिन्दूर लगाकर स्थापित करने से धन लाभ होता है।

रूद्राक्ष– सिद्ध रूद्राक्ष के दर्शन या स्पर्श (छूने) मात्र से पापों का नाश होता है तथा घर में या प्रतिष्ठान में स्थापित करने से नकारात्मक ऊर्जा का नाश होता है एवं मानसिक शान्ति प्राप्त होती हैं।

अक्षत– अक्षत (चावल) से पूजन करने से व स्थापित करने से कुल वृद्धि होती है एवं रुके हुये कार्य भी सिद्ध होते हैं। अक्षत (चावल) से बनी खीर से लक्ष्मी जी का हवन करने से लक्ष्मी जी स्थिर बनी रहती है एवं उनकी असीम कृपा भी बनी रहती हैं।

धनियाँ– सिद्ध साबुत धनियाँ को पूजा स्थल में या तिजोरी में स्थापित करने से धन धान्य की वृद्धि होती है तथा तंत्र एवं टोने–टोटकों से बचाव भी होता है।

यह धन प्राप्ति पूजा सामग्री का प्रयोग कर आप लाभान्वित हो सकते हैं। दीपावली पूजन की विधि पत्रिका के पेज क्रमांक 12 पर विस्तार से दे रखी है। पूजन सामग्री प्राप्ति हेतु (भविष्य दर्शन) संस्थान में सम्पर्क करें।

महेश पारासर

हमारे यहाँ रत्नों को लैब से टेस्टेड **(Lab Certified)** कराकर उपलब्ध कराये जाते हैं। रत्नों की **100%** शुद्धता के लिये रत्न के साथ उसकी शुद्धता का सर्टीफिकेट दिया जाता है।

दीपावली पूजन का समय सन् 2014

23–10–2014 गुरुवार के दिन पूजन समय प्रातः 8:30 से 12:40 तक, दोपहर 2:52 से 5:19 बजे तक, सांय 6:55 से 11:05 बजे तक, रात्रि 01:30 से 3:44 बजे तक के मुहूर्त रहेंगें। जिसमे सर्वश्रेष्ठ पूजन समय दोपहर 12:02 से 12:40 बजे तक, सायं 4:17 से 5:19 बजे तक, सांय 6:55 से 7:17 तक एवं रात्रि 01:30 से 3:44 बजे तक रहेंगें। जिसमें अभीष्ट धन लाभ, सिद्धि प्रद रहेगी। राहुकाल का समय दोपहर 1:27 से 2:52 तक।

अमृत वचन

उपासना पद्धतियों में भारत की दृष्टि विशाल है वैसी अन्य धर्मों की नहीं है। अन्य धर्म वाले अपनी ही उपासना पद्धति को श्रेष्ठ मानकर दूसरों को मान्यता नहीं देते। जबकि भारत सभी को मान्यता देता है।

यंत्रों को पुनः सिद्ध कराने हेतु

भविष्य निर्णय पाठकों के लिये एक सुनहरा अवसर। दीपावली पर गुरु जी (डा. महेश पारासर) द्वारा प्रत्येक वर्ष विशाल हवन किया जाता है जिसमें पुराने यंत्रों को विधिवत रुप से सिद्ध किया जाता हैं। अगर आप भी अपनें यंत्रों को पुनः सिद्ध कराना चाहते है तो भविष्य दर्शन कार्यालय पर सम्पर्क करें।

मों. 9719666777, 9557775262

पता परिवर्तन की सूचना अवश्य दें

अक्सर भविष्य निर्णय द्वि–मासिक पत्रिका के सदस्य अपना भवन बदल लेते हैं, किन्तु पता परिवर्तन की सूचना नही देते जिसके कारण भविष्य निर्णय द्वि–मासिक पत्रिका पुराने पते पर ही भेजी जाती रहती है, किन्तु आपको नही मिलती। अतः पता परिवर्तन की सूचना कार्यालय पर फोन कर के दें। फोन न. 9719666777, 9557775262

दीपावली और स्वप्न

डा. रचना के भारद्वाज
वास्तु शास्त्राचार्य, ज्योतिष प्रभाकर, अंक विशारद
नई दिल्ली

1. यदि स्वप्न में आप अपने को हल्दी चढ़ा हुआ देखते है। तो कुंवारे होने पर विवाह हो सकता है। और यदि विवाहित है तो शीघ्र धन प्राप्ति हो सकती है।

2. यदि स्वप्न में आप अपने शत्रु से हाथ मिला रहे हों तो जानियें कि आपके कर्म व्यवसाय में लाभ हाने वाला है।

3. यदि स्वप्न में आप आसव का सेवन कर रहे है तो इसका अर्थ हो सकता है कि आपकी लॉटरी निकलने वाली है या आपको कोई गड़ा धन प्राप्त होने वाला है।

4. स्वप्न में ट्रेन में यात्रा करना भी धन आने का सूचक है।

5. स्वप्न में गुलाब के फूलों का ढेर देखना भी धन आने का संकेत है।

6. यदि स्वप्न में आप बैंक से धन निकाल रहे है तो यह धनहानि का सूचक है।

7. स्वप्न में मधुमक्खी का छत्ता देखना भी धनदायक है।

8. स्वप्न में यदि आप किसी को धन, ट्रॉफी, अनाज आदि दे रहे है तो जानिये की भविष्य में आपको धनलाभ होने वाला है।

9. यदि स्वप्न में आप कोई खेती योग्य जमीन खरीद रहे है तो भविष्य में आपके जीवन में खुशहाली ही खुशहाली आने वाली की संभावना रहती हैं।

10. स्वप्न में आग लगते देखना भी लक्ष्मीदायक एवं शुभ माना जाता है।

11. स्वप्न में मनभावना संगीत सुनाना भी लक्ष्मीदायक व शुभ होता है।

12. स्वप्न में यदि आप हवा में उड़ रहे है तो यह आपसे लक्ष्मी के रूठने का संकेत है।

13. स्वप्न में हाथी, शेर, घोड़ा, बैल, समुद्र आदि देखते है तो यह लक्ष्मीदायक है।

14. स्वप्न में यदि आप अपने को जंगल में पाते है तो यह धन हानि का सूचक है परंतु यदि आप अपने को भययुक्त महसूस करते है तो यह धन लाभ का सूचक है।

15. स्वप्न में आप यदि घने बादल देखते है। तो यह अर्थ हानि का सूचक है परंतु यदि इन बादलों के बीच में से सूर्य उगते हुऐ देखते है तो यह लक्ष्मी आगमन का संकेत है।

16. स्वप्न में यदि आप या आपकी पत्नी शर्ट में बटन लगा रही हो तो इससे आभास होता है। कि आप अपनी पत्नी के साथ या अकेले ही धन कमाने के अनेक अवसर प्राप्त करने वाले है।

17. स्वप्न में पुल पार करना उलझनों से छुटकारा पाने का संकेत है परंतु यदि पुल से नदी में गिर रहे है तो हानि का सूचक है।

18. स्वप्न में यदि आप संत महात्माओं के साथ सत्संग कर रहे है तो समझ लीजिए कि आपको आध्यात्मिक प्राप्ति होने वाली है।

❋❋❋

शंख का जल क्यों छिड़का जाए?

ब्रह्मवैवर्त पुराण में लिखा है कि

जलेनापूर्य शंखे च तत्र संस्थापयेद् बुधः।
पूजोपकरणं तेन, जलने क्षालयेत्पुनः।।

अर्थात् शंख में जल भरकर देवस्थान में रक्खे, पुनः उससे सभी पूजन सामग्री का प्रक्षालन करें। शंख में भरा जल और वह भी विष्णु भगवान की प्रतिमा के सामने परम पवित्र माना गया है। अथर्ववेद में शंख को मणि नाम से स्मरण किया है और इसकी महिमा के वर्णन में पूरा एक सूक्त लिखा है। बर्तन के संयोग से उसमें रखी वस्तु भी उसके गुणों से प्रभावित हो जाती है, यह प्रत्यक्ष देखा जाता है। जैसे पीतल के बर्तन में रखा दही विकृत हो जाता है। कांसे और तांबे के बर्तन में रखा घी बिगड़ जाता है। अतः शंख के गुणों से सभी वस्तुओं और दर्शकों को भी लाभान्वित कैसे किया जाए इसका सहज उपाय यही हो सकता है कि तत्संयुक्त जल में शंख के गुणों का आवाहन करके फिर उसे सर्वत्र वितरण किया जाय। इस क्रिया में यह भी समझ लेना आवश्यक है कि जल में डाले हुए द्रव्यों की विशेषता सौ गुणी हो जाती है। गर्भवती स्त्री यदि शंख में रखे हुए जल द्वारा स्नात शालिग्राम शिला का चरणामृतपान करे तो अन्यान्य लाभों के साथ उससे उत्पन्न बालक कभी मूक नहीं हो सकता। रूक रूक कर बोलने वाले हकले व्यक्ति पर तो शंख जल पान का अद्भूत प्रभाव होता है।

❋❋❋

Consult any problems: Health, Wealth, Marriage, Business, Education, Family Relations, Jobs,Enemies & Property
Remedies by Stones, Yantra, Mantra & Pooja
Horoscope, Match Making & Varshphal
Mon to Thu12 PM to 6 PM
भविष्य दर्शन®
Dr. Rachna K Bhardwaj
Consultant of Astrology & Vastu
CONSULTATION ON PRIOR APPOINTMENT ONLY : PH: 09717195756
H.O.- Dr. Mahesh Parasar, Opp. Shah Cinema, Agra Ph. 0-0562-2525262,2856666
❋❋❋

दीपावली पर श्री महालक्ष्मी जी को प्रसन्न करने के अद्वितीय सूत्र

डा. शोनू मेहरोत्रा
वास्तुमहर्षि, ज्योतिषप्रभाकर,
वास्तु प्रवक्ता ;अखिल भारतीय–ज्योतिष संस्थान

प्रिय पाठको! दीपावली की हार्दिक शुभकामनायें। धर्मग्रन्थों में दीपावली का त्यौहार पांच दिन का माना गया है। इसीलिये धनतेरस से ही लक्ष्मी के आवाहन की तथा रोग–दोष क्लेश आदि से छुटकारा पाने हेतु उपासना की प्रक्रिया शुरू हो जाती है। यदि आप पारिवारिक कलह, दरिद्रता तथा बाधाओं से छुटकारा पाना चाहते है, स्वास्थ्य, लक्ष्मी व शांति की आमद चाहते है तो पाँचों दिन कथानुसार कर्म करें, निश्चित रूप से मनोवांछित फल प्राप्त होगें।

धनतेरस– यह यमराज का दिन भी कहलाता है। इस दिन यम को प्रसन्न करने से परिवार में वर्ष भर शान्ति व सुख कायम रहता है। यह स्वास्थ्य के देवता धन्वन्तरि का जन्म दिन भी है। जो निरोगी रहने का वरदान भी देते हैं। परेशानियों से मुक्ति पाने के लिये कुछ उपयोगी सूत्र यहां दे रहे हैं।

1. कुबेर यन्त्र की स्थापना उत्तरी हिस्से में करें व उनका विधिवत धूप, दीप, नैवध, पुष्प, रोली, अक्षत से पूजन करें। कमलगट्टे या स्फटिक की माला से कुबेर मंत्र का जाप करें। इससे वर्ष भर घर में धन भरा रहेगा।

2. धनतेरस से एक दिन पूर्व घर का मुखिया दक्षिण में सिर करके सोय वा नारियल अपने सिरहाने रखें। धनतेरस की शाम को नारियल व तेल से भरा दीपक लेकर नदी या तालाब के किनारे जायें। घाट पर खड़े होकर जल की पूजा करें पुष्प, धूप चढ़ायें व यम देवता को प्रणाम करके जल में नारियल छोड़ें व बाद में दीपक जलाकर पानी में बहायें। इस पूजा से सारे कष्टों से मुक्ति मिलती है।

3. धनतेरस के दिन किसी को विशेष रूप से प्रातः काल धन उधार न दें।

4. प्रातः काल उठकर घर की स्त्री मुख्य द्वार पर एक लोटा जल डाल दें इससे घर में लक्ष्मी आने के मार्ग प्रशस्त होते है।

5. धनतेरस का पूजन घर के पुरूष व स्त्री दोनो को ही करना चाहिये। पुरूषों को कुबेर यन्त्र का पूजन व स्त्रियों को कनकधारा यन्त्र एंव कनकधारा पोटली का पूजन करके वर्ष भर अपने घर में धन सम्पदा स्वर्ण, आभूषण भरे रहने की प्रार्थना करनी चाहिये। जिस घर में विधिवत पुरूष व स्त्री कुबेर व कनकधारा यन्त्र का पूजन करते है। उन्हें वर्ष भर धन की कमी महसूस नहीं होती है।

नरक चौदस– यह दिन अपने घर प्रतिष्ठान के साथ ही साथ अपने मन के मैल को साफ करने अर्थात् जाने अनजाने हुये पापों का प्रायश्चित का दिन है। ये दिन अपने परायों से क्षमा मांगने का सर्वश्रेष्ठ दिन है। यह दिन दान हेतु व जनकल्याण के लिये बना है।

1. इस दिन सर्वप्रथम, गाय की रोटी, कुत्ते व पक्षियों की रोटी अवश्य निकालें। गरीबों को काला–सफेद कम्बल दान करें।

2. इस दिन हिंजडों को दान का भी विशेष महत्व है और यदि बुधवार पड़े तो बहुत ही शुभ रहेगा।

3. यह तिथि रूपचौदस के रूप में भी मनाने का प्रचलन है। प्रातः काल सूर्य उदय से पूर्व उठकर लौकी को अपने सिर पर से सात बार घूमा कर स्नान करने से रूप सौन्दर्य बना रहता है।

4. इस दिन साफ सफाई का विशेष महत्व है। यदि घर में रंग रोगन सम्भव नहीं है। तो घर की साफ सफाई के बाद पूरे घर में अन्दर से बाहर गंगाजल छिडकना श्रेष्ठ रहता है।

5. इस दिन घर की सजावट के पश्चात् नजर से बचने के लिये नजर दोष निवारक यंत्र एवं नजर पोटली की स्थापना मुख्य द्वार पर अवश्य करें। इससे घर नजर व टोने टोटकों से सदैव बचा रहेगा। घर में बुरी आत्माओं का प्रवेश नहीं हो सकेगा क्योकि कुछ लोग दीपावली की रात्रि तांत्रिक गतिविधियां करते है। इस प्रक्रिया को अपनाने से आप इससे बचे रहेंगें।

दीपावली– इस दिन लक्ष्मी जी की विशेष कृपा पाने के लिये इन सूत्रों को अपनायें।

शेष पेज 19 पर.....

Free services offered by us on our website www.bhavishydarshan.in

1. Horoscope Making
2. Match-Making
3. Lal Kitab Predictions
4. Successful Name
5. Baby Names
6. Favourable Gems
7. Panchang
8. Calender
9. Bi-monthly Magzine
10. Daily/Yearly Rashiphal
11. Vastu Remedies
12. Details of Yantra/Mantra

Connect With Us

and get 15% discount*

*valid for a single user

जगद्जननी भगवती महालक्ष्मी

डॉ. अरविन्द मिश्र
ज्योतिष भूषण, वास्तुशास्त्राचार्य

अलौकिक दिव्य धाम बैकुंठ में भगवान विष्णु विश्रामरत थे और भगवती उन्हे पंखा कर रही थी। भगवती लक्ष्मी विष्णु जी को बड़े प्रेम से निहार रही थी। वे देख रही थी कि भगवान विष्णु जी के मुखारविंद पर अति प्रसन्नता झलक रही है। उनके वदन व नयनों से आनंद का सागर निस्सृत हो रहा है। उनकी नासिका मनोरम् भ्रंयुगल कमनीय एंव कपोलयुगल रूचिर प्रतीत हो रहे है। वे तो कदर्प से भी अधिक मनोहारी एंव नित्य किशोर है। अंग–प्रत्यंग रमणीय है। उनके ओंठ गुलाबी व अपांगो (नेत्रों के कोनो) में किंचित अरूणिम आभा छिटक रही है। गले में वे अघानुलंबिनी वनमाला धारण किये है। जिसमें समस्त ऋतुओं के दिव्य सुरभित पुष्प गुंथित है और मध्य में कदंब–कुसुम भी लगा हुआ है।

भगवती लक्ष्मी निहारती जा रही थी कि उन्होंने अपनी चारों भुजाओं में क्रमशः पाँचजन्य शंख, सुदर्शन चक्र, कोमोद की गदा और एक नीला पद्म धारण किया हुआ है। उत्तरीय भी पीतांबर का ही है। ये सबको निहारते विभोर भगवती की दृष्टि उनके वक्षः स्थल के दक्षिण भाग में श्रीवत्स अर्थात् भृगुपद–चिन्ह पर आकर टिक गई है। उनकी सुकोमल दृष्टि वक्र हो गई और उसमें रोष प्रकट होने लगा। चेहरा क्रोध से आरक्त हो गया उनके मानस पटल पर अतीत की कडई स्मृति चल चित्र की भाँति चलायमान होने लगी।

भगवती लक्ष्मी उस असहाय एंव असहज करने वाली घटना की स्मृति मात्र से क्रोधावेविटत हो उठी, क्योकि भृगुपद किसी और का नहीं, बल्कि अपने ही पिता श्री महर्षि भृगु के पदाघात का निशान था। अकारण और बिना पूर्ण सूचना के शयनागार में प्रवेश करके पिताश्री ने भगवान विष्णु के वक्षः स्थल पर पदाघात कर दिया था। इस औचक एंव अचानक हुई घटना से वे अपमान एंव क्रोध की त्वरा से झुलस उठी थी परन्तु भगवान विष्णु जी ने नतमस्तक होकर अपने श्वसुर के पादों को सहलाते हुए कहा कहाँ तो अपका निरंतर तप से तपता हुआ कोमल चरण और कहाँ यह मेरी व्रजकर्कश छाती। आपके चरण को बड़ा कष्ट हुआ होगा। आगे वे सहजता के साथ कह रहे थे हे ब्राह्मण देव आज आपने मुझ पर अद्भुत अनुग्रह किया। आज मैं कृतार्थ हो गया। अब आपके दिव्य चरणों की धूल सदा सर्वदा मेरें हृदय पर अंकित रहेगी। अतीत की घटना वर्तमान के समान लग रही थी। भगवान विष्णु विश्राम कर रहे थे। परंतु माता लक्ष्मी का अंग प्रत्यंग आक्रोश से आंदोलित हो कर कांप रहा था।

कहते है, क्रोध विवेक का हरण कर लेता है। पति के अपमान से उनके अन्दर पिता के प्रति क्रोध की बाढ़ उठी थी और तब उन्होने अपने ही पिता को शाप देकर कहा था हे ब्राह्मण आपके घर में एंव अन्य किसी के घर में अपना आवास आज से त्यागती हूँ। आज से ब्राह्मण जाति दरिद्र एंव गरीब बनकर रहेगी क्योकि मैं आप लोगो का बहिष्कार करती हूँ। अपमान एंव क्रोध की इस दशा में पिता और पुत्री का संबंध ही खो गया था। परंतु महर्षि भृगु शांत एंव सहज थे, अपनी पुत्री के इस अभिशाप पर विहंस थे, मानो उन पर उसका कुछ प्रभाव ही न पड़ा हो, लेकिन इस अभिशाप से सारी ब्राह्मण जाति भय से कातर हो रही थी। किसी को कुछ भी नहीं सूझ रहा था कि यह संकट कैसे टलेगा। स्वंय भगवान विष्णु भी लक्ष्मी जी के इस शाप से स्तब्ध थे। बैकुंठ लोक में ही नही सभी धामों में सन्नाटा पसर गया था। तब भगवान विष्णु ने यह स्तुति की

पद्यालयां पद्यकरां पद्यपत्र निभेश्रणाम्।
वन्दे पद्य मुखीं देवी पद्यनाभप्रियामहम।।

इस स्तुति से भी उनका क्रोध शांत न भी सका। तब उन्होने महर्षि भृगु की और विनीत दृष्टि से देखा। इस दृष्टि में बहुत कुछ छिपा हुआ था। अनकहे भाव उमड़ रहे थे और कह रहे थे कि हे महर्षि आप ही इसका समाधान ढूढे। भगवान विष्णु के इस संप्रेषित सरल भाव से महर्षि भृगु का हदय पसीज उठाः क्योकि वे तो उनके धैर्य की परीक्षा लेने आए थें। सरस्वती नदी के तट पर ऋषियों की परिषद् ने उन्हे सर्वसम्मति से इस लिए नियुक्त किया था कि वे त्रिदेवो की सहनशीलता, धैर्य एंव क्षमा की परीक्षा ले। ऋषियों को यह अधिकार प्राप्त है क्योकि उनके स्तर देव मंडल से भी ऊँचा होता है। भृगु की परीक्षा में पिता ब्रह्मा एंव बड़े भ्राता रूद्रदेव असफल हो चुके थे और भगवान विष्णु सफल हो चुके थे ऐसे में विष्णु जी की इस अनुनय को वे कैसे अस्वीकार कर सकते थे।

महर्षि भृगु वही खड़े होकर जगजननी भगवती लक्ष्मी के उस दिव्यरूप की स्तुति एंव आवाहन करने लगें।

शेष पेज 17 पर.....

मेवाड़ विश्वविद्यालय व **अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ**
के संयुक्त तत्वाधान में
ज्योतिष तंत्र शिक्षा प्रसार समीति, आगरा
के अंतर्गत करें
4 वर्षीय इंटिग्रेटेड पोस्ट ग्रेजुएशन एवं पीएच. डी.
आवश्यक शैक्षणिक योग्यता - स्नातक (ग्रेजुएशन)
अथवा स्नातकोत्तर (पोस्ट ग्रेजुएशन)

देय राशि	₹ 75000/- प्रति वर्ष
विवरण पत्रिका	₹ 500/-
प्रवेश परीक्षा शुल्क	₹ 1000/-

भविष्य दर्शन® ज्योतिष एवं वास्तु शिक्षण संस्थान
भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, एम. जी. रोड़, आगरा। मो. 9557775262, 9719666777

दीपावली पर धन आगमन के अचूक उपाय

पवन कुमार मेहरोत्रा
ज्योतिषप्रभाकर एवं अंक विशारद
नज़र दोष विशेषज्ञ

देवी महालक्ष्मी सम्पूर्ण ऐश्वर्य चल–अचल, संपत्ति धन, यश, कीर्ति एंवम् सकल सुख वैभव को देने वाली साक्षात् जगत माता नारायणी है। श्री गणेश जी समस्त विघ्नों के नाशक, अमंगलो के हरण कर्त्ता सद्विद्या एंवम बुद्धि के दाता है। दीपावली के दिन इनकी संयुक्त पूजा अर्चना करने से कुटुम्ब परिवार में धन सम्पति का सुख चिरकाल तक बना रहता है। महालक्ष्मी के पूजन में कुछ दुर्लभ वस्तुओं जैसे श्री यन्त्र, कनकधारा यन्त्र, कुबेर यन्त्र, एकमुखी रुद्राक्ष, दक्षिणावर्ती शंख, गोमती चक्र, कौडिया, हत्था जौड़ी, एकांक्षी नारियल, कमलगट्टे की माला, लक्ष्मी यन्त्र इत्यादि का प्रयोग होताहै। इसके दुर्लभ प्रभाव से लक्ष्मी का वास सदैव के लिये आपको प्राप्त हो जाता है। परन्तु इनका प्रयोग शुभ मुर्हूत पूर्ण विधि विधान से करना चाहिये। तभी आपको वर्ष भर इनका शुभ फल प्राप्त होता रहेगा।

1. पारद लक्ष्मी गणेश– दीपावली के दिन शुभ मुर्हूत में एक चौकी पर लाल वस्त्र विछा कर चावल से स्वास्तिक बनाकर उस पर पारद लक्ष्मी–गणेश की स्थापना करने से सम्पूर्ण विघ्न बाधाओं का निराकरण होता है। व्यापार एंवम नौकरी में अच्छी तरक्की होती है।

2. कुबेर यन्त्र– धनतेरस के दिन कुबेर यन्त्र की स्थापना करने व विधिवत घूप, दीप, पुष्प अक्षत्, नैवद्य इत्यादि से पूजन करने से अक्षय धन कोष की प्रप्ति होती है। नवीन आय के स्त्रोत बनते है। व्यवसाय में वृद्धि होती है।

3. गोमती चक्र एंवम कौडी– दीपावली के मुर्हूत में गोमती चक्र व कौडी जो कि लक्ष्मी जी को अत्यन्त प्रिय हैं उन्हे गंगाजल एंवम् पंचाभूत से शुद्ध करके पूजन स्थल पर रखें इसके प्रभाव से धन का त्वरित आगमन एवं बरकत बनी रहेगी।

4. कमलगट्टे की माला– यह माला लक्ष्मी के सर्वाधिक प्रिय कमल पुष्प के बीजों से बनायी जाती है। इस माला से लक्ष्मी मंन्त्रों का जप करने से साधक को शीघ्र मनोवांछित सफलता प्राप्त होती है।

5. सर्वकार्य श्री यन्त्र– यंत्र राज श्री यन्त्र की जितनी प्रशंसा की जाय उतनी ही कम है तथा यही यन्त्र स्फटिक पर बना हो तो है उसकी महिमा में और चार चांद लग जाते है। इसके दर्शन करने मात्र से ही मनुष्य धन्य हो जाता है। दीपावली के शुभ मूहूर्त में इसका पूजन धन के साथ–साथ यश कीर्ति भी बढ़ाता है।

6. एकांक्षी नारियल– एंकाक्षी नारियल को दीपावली के शुभ मुर्हूत में भक्ति भाव से मौली बांधकर गंध, अक्षत, इत्र से पूजन कर लक्ष्मी जी को चढ़ाये इससे लक्ष्मी शीघ्र प्रसन्न होती है। धन धान्य के द्वार खोलती है।

7. महालक्ष्मी यन्त्र– महालक्ष्मी यन्त्र की विधिवत पूजा करने से भगवती लक्ष्मी की कृपा से अप्राप्त लक्ष्मी की प्राप्ति होती है तथा प्राप्त लक्ष्मी निरकार तक बनी रहती है। इस पर इत्र रोली अक्षत चढ़ाये व कमल गटटे की माला से लक्ष्मी जी के लघु बीज यंत्र का जाप करें।

8. कनक धारा यन्त्र– इस यन्त्र का दीपावली पर पूजन करके घर में रखने से घर में धन एंवम स्वर्ण, रजत, आभूषणों की वृद्धि निरन्तर होती रहती है। कनक का अर्थ स्वर्ण तथा गेंहू होता है। अतः दीपावली के शुभ मुर्हूत में पीले वस्त्र पर चावल श्री बनाकर उसपर इस यन्त्र को स्थापित कर हल्दी की माला से मन्त्र जाप करें।

9. उल्लू यंत्र– तंत्र शास्त्र में उल्लू का बड़ा महत्व है। उल्लू लक्ष्मी का वाहन माना जाता है। यह सामने बाले को वशीकरण करने में भी काम आता है। इसकी पूजा दीपावली पर करने से स्थिर लक्ष्मी की प्राप्ति निश्चित है। इसको स्थापित करने के बाद रोजाना पक्षियों को दाना डालना अनिवार्य है।

10. हत्था जोड़ी– यह अति दुर्लभ है यह रक्षा करती है। इससे लक्ष्य की प्राप्ति शीघ्र अति शीघ्र होती है।

11. बिल्ली की जेर– यह अत्यन्त प्रभावशाली होती है लक्ष्मी प्राप्ति के लिये इसकी पूजा करके इसे तिजोरी में स्थापित किया जाता है।

12. एक मुखी रूद्राक्ष– यह भी दीपावली पर पूजन स्थल पर रखने से घर में किसी भी प्रकार की अनहोनी होने की सम्भावना नही रहती है। यह रक्त चाप उदर विकार आदि से निदान कराता है। वहीं दूसरी और भूत प्रेत बाधा से भी मुक्ति देता है।❋❋❋

Free services offered by us on our website www.bhavishydarshan.in

1. Horoscope Making
2. Match-Making
3. Lal Kitab Predictions
4. Successful Name
5. Baby Names
6. Favourable Gems
7. Panchang
8. Calender
9. Bi-monthly Magzine
10. Daily/Yearly Rashiphal
11. Vastu Remedies
12. Details of Yantra/Mantra

Connect With Us

and get 15% discount*

*valid for a single user

आर्थिक संकट एंव ऋण मुक्ति दायी प्रयोग

डा. कविता अग्रवाल
ज्योतिष ऋषि, वास्तुशास्त्राचार्य, अंक विशारद
प्रवक्ता – अखिल भारतीय–ज्योतिष संस्थान संघ
फ्रेंचाइजी – 'लाल किताब अमृत'
जी.डी. वशिष्ठ– 'बस अब दुख और नही'

वर्तमान समय में मध्यम वर्ग में अधिकतर व्यक्ति आर्थिक संकट एंव ऋणग्रस्तता से पीड़ित है। इसके निवारण के लिए सामान्य प्रयासों के अतिरिक्त भाग्य की अनुकूलता भी यदि प्राप्त हो, तो शीघ्र ही राहत प्राप्त हो सकती है। इस हेतु आर्थिक संकटो एंव ऋणों से मुक्तिदायक अचूक प्रयोग यहाँ दिया जा रहा है।

यह प्रयोग ऋषि धौम्य की कृपा से युधिष्ठिर ने प्राप्त किया था, जिसके फलस्वरूप उसे भगवान सूर्य से एक ऐसा अक्षय पात्र प्राप्त हुआ, जो कभी खाली नहीं होता था। मनचाही वस्तुएं इससे प्राप्त की जा सकती है। इस स्तोत्र के प्रभाव से आर्थिक संकटो से मुक्ति प्राप्त होती है। ऋणग्रस्तता समाप्त होती है। राजकार्यो में सफलता प्राप्त होती है। आत्मविश्वास में वृद्धि होती है। बुद्धि कुशाग्र होती है एंव इसके अतिरिक्त भी अन्य कई ऐसे लाभ हैं। जो प्रयोग को करने से ज्ञात होते है।

इस स्त्रोत का प्रारम्भ किसी भी संक्रान्ति के दिन से अथवा रविपुष्य योग से किया जा सकता है। पूर्ण लाभ प्राप्ति के लिए इस स्त्रोत के प्रतिदिन तीन पाठ करने चाहिए एंव प्रत्येक माह की संक्रान्ति के दिन 12 पाठ करने चाहिए।

प्रयोग विधि– सर्वप्रथम अपने समक्ष एक चौकी पर लाल कपडा विछाकर उस पर रक्तवर्णी अक्षतों से अष्टदल कमल का निर्माण करे। उस पर भगवान सूर्य की प्रतिमा अथवा चित्र स्थापित करें। उसी चौकी पर एक सुन्दर सा स्वास्तिक बनाकर गणेश की स्थापना भी करें। यदि पहले से ही गणेशजी का चित्र आपके पूजास्थल पर है तो उसे ही पूजा में काम लेना अधिक अच्छा रहेगा। अपेक्षित फलों की शीघ्रता से प्राप्ति के लिए बारहुखी रूद्राक्ष धारण करना भी लाभदायक होगा। इस रूद्राक्ष को प्रयोग आरम्भ करते समय चौकी पर शुद्ध करके रखें और उसका पूजन करें। तत्पश्चात् निम्नलिखित स्तोत्र का पाठ करें। पूजन के अन्त में भगवान सूर्य की प्रतिमा अथवा चित्र एंव गणपति के चित्र को पूजास्थल पर स्थापित कर दें और द्वादश मुखी रूद्राक्ष को गले में धारण कर लें। चावलों को किसी पीपल के वृक्ष में डाल दें।

यह प्रयोग जन्मकुंडली में ग्रहण दोष, कुपित सूर्य हो सूर्य लग्नेश, सप्तमेश, दशमेश व द्वितीयेश हो लाभकारी है।

ध्यान– सर्वप्रथम निम्नलिखित ध्यान को पढ़ते हुए अक्षत पुष्प हाथ में लें लें और ध्यान करने के पश्चात् सामने चौकी पर चढ़ा दे।

दुर्योधनेनैव दुरोहरेण निर्वासितायैव युधिष्ठिराय।
पात्र प्रदत्त भुवनोपभोज्यं तस्मै नमः सूर्यमहोदयाय।।

स्तोत्र पाठ– ध्यान के पश्चात् निम्नलिखित स्तोत्र का पाठ करें।

सूर्योऽर्यमा भगंस्त्वष्ट्रा पूषार्कः सविता रविः।
गभस्तिमानजः काले मृत्युर्धाता प्रभाकरः।।
पृथिव्यापश्च तेजश्च खं वायुश्च परायणम्।
सोमो बृहस्पतिः शुक्रो बुधोऽङ्गांरक एंव च।।
इन्द्रो विवस्वान् दीप्तांशु शुचिः शौरिः शनैश्चरः।
ब्रह्मा विष्णुश्च रूद्रश्च स्कन्दो वै वरूणो यमः।।
वैद्युतो जाठरश्चाग्निरैन्धनस्तेजसां पतिः।
धर्मध्वजो वेदकर्ता वेदाङ्गो वेदवाहनः।।
कृतं त्रेता द्वापरश्च कलिः सर्वमलाश्रयः।
कला काष्ठा मुहूर्ताश्च क्षपा यामस्तथा क्षणः।।
संवत्सरकरोऽश्वत्थः कालचक्रो विभावसुः।
पुरूषः शाश्वतो योगी व्यक्ताव्यक्तः सनातनः।।
कालाध्यक्षः प्रजाध्यक्षो विश्वकर्मा तमोनुदः।
वरूणः सागरोंऽशश्च जीमूतो जीवनोऽरिहा।।
भूताश्रयो भूतपतिः सर्वलोकनमस्कृतः।
स्रष्टा संवर्तको वह्निः सर्वस्यादिरलोलुपः।।
अनन्तः कपिलो भानु कामदः सर्वतोमुखः।
जयो विशालो वरदः सर्वधातुनिषेचिता ।।
मनः सुपर्णो भूतादिः शीघ्रगः प्राणधारकः।
धन्वन्तरिर्धूमकेतुरादिदेवा दितेः सुतः।
स्वर्गद्वारं प्रजाद्वारं मोक्षद्वारं त्रिविष्टपम्।
देहकर्ता प्रशान्तात्मा विश्वात्मा विश्वमतोमुखः।
चराचरात्मा सूक्ष्मात्मा मैत्रेयः करूणान्वितः।।
एतद् वै कीर्तनीयस्य सूर्यस्यामिततेजसः।
नामाष्टशतकं चेदं प्रोक्तमेतत् स्वंयभुवा।।
सुरगणपितृयक्षसेवितं ह्यसुरनिशाचरसिद्धवन्दितम्।
वरकनकहुताशनप्रभं प्रणिपतितोऽस्मि हिताय भास्करम्।।
सूर्योदये यः सुसमाहित पठेत् स पुत्रदारान् धनरत्नसंचयान्।
लभेत जातिस्मरतां नरः सदा धृतिं च मेधां च स विन्दते पुमान्।
इमं स्तवं देववरस्य यो नरः प्रकीर्तयेच्छुचिसुमनाः समाहितः।
विमुच्यते शोकदवाग्रिसागराल्लभेत कामान् मनसा यथेप्सितान्।।

❋❋❋

यंत्रों को पुनः सिद्ध कराने हेतु

भविष्य निर्णय पाठकों के लिये एक सुनहरा अवसर। दीपावली पर गुरु जी (डा. महेश पारासर) द्वारा प्रत्येक वर्ष विशाल हवन किया जाता है जिसमें पुराने यंत्रों को विधिवत रुप से सिद्ध किया जाता हैं। अगर आप भी अपनें यंत्रों को पुनः सिद्ध कराना चाहते है तो भविष्य दर्शन कार्यालय पर सम्पर्क करें। मों. 9719666777, 9557775262

दीपावली पूजन विधि

श्री गणेशजी एवं लक्ष्मीजी की मूर्तियाँ अथवा चित्र, रोली, चावल, फूलमाला, पान, सुपारी, लौंग, छोटी इलायची, कलावा, धूपबत्ती, कपूर, रूई, घी, माचिस, मीठा तेल, खील-बतासे, पंच मेवा, खाँड़ के खिलौने, मिठाई, नुक्ती के लड्डू,फल, गंगाजल, दूध, दही, घी, शहद, बूरा, जनेऊ, घिसा हुआ चन्दन, रोली, बसने की पुड़िया, गोला, नारियल पानी वाला, वस्त्र चढाने वाले और रूपये थाली में सजा कर रखें।

श्री सरस्वतीजी श्री लक्ष्मीजी श्री गणेशजी

श्री हनुमान जी

श्री सरस्वती यंत्र	श्री लक्ष्मी वाहन यंत्र	श्री गणेश यंत्र
व्यापार वृद्धि यंत्र	श्री यंत्र	15 वाँ यंत्र
श्री विष्णु यंत्र	गोमती चक्र	पूजन सामिग्री पेज न. 02 पर

भवन के मुख्य द्वार पर

॥ श्री गणेशाय नमः श्री महालक्ष्म्यै नमः॥

शुभ 卐 लाभ

सिन्दूर में घी मिलाकर अनामिका जिसमें अंगूठी पहनते है उस उंगली से लिखें। एक साबुत बताशा सतिये के बीच में चिपका दें।

दीपावली पूजन कैसे करें

दीपावली लक्ष्मी जी का पर्व माना गया है। प्रत्येक कार्य की पूर्ति के लिये लक्ष्मी (धन) आवश्यक है, इस पूजा विधि का आधार यही मंत्र है।

मंन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरः।
यत्पूजितं मया देव परिपूर्ण तदस्तु मे ।।

मंत्र का सरल भाव है कि मै मंत्र, क्रिया, विधि और भक्ति आदि नहीं जानता हूँ जैसे भी आपकी पूजा की है आप उससे प्रसन्न होकर मेरा कल्याण करें।

पूजा विधिः सबसे पहले स्नान करके नया जनेऊ पहने, नये अथवा धुले हुए कपड़े पहने, टोपी लगावें। पूरब-पश्चिम अथवा उत्तर की ओर मुँह करके अपने आसन पर बैठ जायें। पत्नी को सीधे हाथ की ओर बैठावें। चुटिया में गांठ लगावें। चुटिया न होने पर चुटिया के स्थान को छू लें।

अपने सामने चौकी या पटरा अथवा जमीन पर अपने सीधे हाथ की ओर गणेश जी एवं उल्टे हाथ की ओर लक्ष्मी जी को चावल डाल कर विराजमान करें। उलटे हाथ की ओर घी का तथा सीधे हाथ की ओर मीठे तेल का (तिल का तेल) दीपक चावल डालकर रख दें।

अपने सामने पूजन की थाली, पंचपात्र आचमनी कटोरी, चम्मच आदि रख लें। दोनों दीपक एवं धूपबत्ती जलावें। चावल हाथ में लेकर हाथ जोड़ें और कहें- **'हे दीपक देवता** जब तक हम पूजन करें तब तक आप जलते रहना। चावल दीपकों के पास चढ़ा दें।

पान अथवा चम्मच से सबके ऊपर **ओउम् नमो भगवते वासुदेवाय** कहकर पानी छिड़क दें। इसे पवित्रकरण कहते हैं। उल्टे हाथ से सीधे हाथ में जल लें और ओउम् नमो भगवते वासुदेवाय कह कर तीन बार पी लें। (पानी पीकर सिर पर हाथ नहीं रखें) हाथ धो लें। यह आचमन है। जरा से चावल उल्टे हाथ में रखकर सीधे हाथ से ढक लें दस बार **''ओउम्''** कहें और अपने चारों ओर छोड़ दें इसे दिशा पूजन अथवा दिग्बन्धान कहते है।

नवग्रह की पूजा करें। चावल, जल, रोली चढ़ाकर फूल माला पहना दें। लड्डू, मिठाई, खील-बतासे चढ़ा दें।

गणेशजी विघ्नविनाशक, बुद्धि और विवेक के देवता हैं हर काम में सर्वप्रथम इनका पूजन किया जाता है। गणेश जी के पूजन का भाव है हम बुद्धि से धन अर्जित करें एवं विवेक से उसे खर्च करें। बुद्धिहीनता, अविवेकी ढंग, गलत तरीके से न तो धन कमायें न इस प्रकार खर्च करें। **ॐ एकदन्ताय विदमहे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो दन्ती प्रयोदयात्॥** अथवा **श्री गणेशायः नमः** कहकर गणेश जी पर चावल छोड़ दें।

प्रत्येक पूजा में गणेश जी के आवाहन के बाद संकल्प करने की परम्परा है। यह संकल्प क्या है ? जब हमारे मन में कोई विचार उठता है तब बुद्धि एवं हृदय से स्थिर (पक्का) करते हैं। ब्रह्माण्ड (मस्तिष्क) ने शरीर के अंगों को प्रेरित किया और विचार कार्य रूप में बदल जाते हैं। इसे संकल्प कहते हैं। अच्छे कार्य उद्घोषणापूर्वक किये जाते हैं। कुकृत्य (बुरे काम) छिपकर करने का मन होता है कोई देख न ले अच्छे संकल्प करने से मनोबल बढ़ता है, दैवीय शक्तियों का सहयोग एवं मार्गदर्शन मिलता है। संकल्प में सम्वत, मास, पक्ष, तिथि, दिन, पर्व, गोत्र एवं नाम बोलकर अहम्करिष्ये कहा जाता है।

सीधे हाथ में जल, चावल, फूल, रुपये रखें पत्नी साथ हों तो उनका हाथ अपने हाथ के नीचे लगावें, बोलें-श्री विष्णु, श्री विष्णु, श्री विष्णु। शुभ सम्वत् 2071, कार्तिक मासे कृष्ण पक्षे अमावस्यां गुरुवासरे अमुक गोत्रेत्पन्न (गोत्र और अपना नाम बोलें) पत्नी साथ हो तो सप्तनीकोहम् परिवार हो तो सपरिवारस्योहंम, (यदि मित्र मण्डली हो तो)इष्टमित्रसहितोहम्। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष एवं स्थिर लक्ष्मी प्राप्ति हेतु गणेश लक्ष्मी पूजनम् अहम करिष्ये। ऐसा कहकर हाथ में रखी वस्तुएँ गणेश जी के समीप रख दें। अब हाथ में चावल लेकर निम्न मन्त्र का उच्चारण करें।

ॐ महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णु पत्नि च धीमहि तन्नो लक्ष्मी प्रचोदयात् अथवा ॐ श्रीं लक्ष्म्यै नमः ॥ कहकर लक्ष्मी जी पर चावल चढ़ावें।

आवाहन्- सर्व सिद्धि की अधिष्ठात्री देवी धन धान्य समृद्धि दाता

दीपावली पूजन का समय सन् 2014

23-10-2014 गुरुवार के दिन पूजन समय प्रातः 8:30 से 12:40 तक, दोपहर 2:52 से 5:19 बजे तक, सांय 6:55 से 11:05 बजे तक, रात्रि 01:30 से 3:44 बजे तक के मुहूर्त रहेंगें। जिसमे सर्वश्रेष्ठ पूजन समय दोपहर 12:02 से 12:40 बजे तक, सायं 4:17 से 5:19 बजे तक, सांय 6:55 से 7:17 तक एवं रात्रि 01:30 से 3:44 बजे तक रहेंगें। जिसमें अभीष्ट धन लाभ, सिद्धि प्रद रहेगी। राहुकाल का समय दोपहर 1:27 से 2:52 तक।

माँ मेरे इस स्थान पर आकर आसन पर विराज कर मेरे द्वारा की जाने वाली पूजा स्वीकार करें। पुष्पासनम् सर्मपयामि बोल कर चावल, फूल चढ़ा दें। एक दौने में फूल, चावल, जल गणेश जी -लक्ष्मी जी के आगे रखकर कहें अर्घ्यम समर्पयामि गंगाजल (पानी) दोने में रखकर कहें ''आचमनीयम् समर्पयामि ''तदन्तर शुद्ध जल से स्नान करावें।'' स्नानम् समर्पयामि ''इसके बाद पारद के गणेश जी -लक्ष्मी जी या चाँदी का रूपया कटोरे में रखकर दूध, दही, घी, शहद एवं बूरा इच्छानुसार चढ़ावें और कहें'' पंचामृत स्नानम् समर्पयामि ''शुद्ध जल से स्नान करावें'' स्नानम् समर्पयामि ''वस्त्र से पोंछकर पात्र में रख लें और नवीन (नया) वस्त्र पहनावें'' वस्त्रम् समर्पयामि ''मंगल प्राप्ति हेतु मंगलसूत्र (मौली) चढ़ावें'' मंगल सूत्रम् समर्पयामि ''गणेश जी को जनेऊ पहनावें'' यज्ञोपवीतम् समर्पयामि ''लक्ष्मी जी को मोती की माला पहनावें'' मुक्ता मालाम् समर्पयामि ''गणेश जी पर चन्दन लक्ष्मी जी पर रोली'' गंधम् समर्पयामि ''चावल लगावें'' अक्षताम् समर्पयामि ''फूलमाला पहनावें'' पुष्पमाल्याम् समर्पयामि ''मीठा, खील, बतासे, खाड़ के खिलौने, पाँचों मेवा, आदि थाली में रखकर कहें'' भोजनम् समर्पयामि ''जल चढ़ावें'' आचमनीयम समर्पयामि ''फल चढ़ावें'' फल समर्पयामि ''गोला या नारियल चढ़ावें'' अखंड ऋतुफलम् समर्पयामि ''पान, सुपारी, लौंग, इलायची, कपूर'' ताम्बूल पुंगीफल आदि समर्पयामि ''दक्षिणा चढ़ावें'' शुभ दक्षिणाम् समर्पयामि ''प्रणाम करके मन से परिक्रमा करें। पुष्प हाथ में लेकर प्रार्थना करें।

श्री गणेशाम्बिका प्रसन्न होकर मेरी तथा मेरे परिवार, इष्ट मित्र एवं सम्पूर्ण भारत राष्ट्र की रक्षा करें तथा भगवती लक्ष्मी माँ स्थिर रूपेण इस भवन में एवं व्यापारादि के स्थान में निवास कर सर्वत्र हर्ष विजय प्रदान करें।

कुछ व्यक्तियों के यहाँ हठरी का पूजन होता है ''हठरी पर दीपक जलावें चावल हाथ में ले लें और कहें ''हठरी दैव्यै आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि ''चावल, जल, रोली चढ़ाकर फूल माला पहना दें। रूपया, लड्डू, मिठाई, खील-बतासे, हठरी में रख दें। दुकान, कारखाना, मिल, दफतर गद्दी आदि स्थानों पर बही खाता, कलम, दवात, तिजोरी (कैश बाक्स, गल्ला), मशीन, तराजू, बॉट आदि का पूजन होता है उसे ऊपर लिखे क्रमानुसार अथवा केवल चावल या खील चढ़ाकर सम्पन्न करें। इसके बाद कमल गट्टे की माला से कुवेर मंत्र का 108 बार जाप करें।

ॐ यक्षाय कुबेराय धन धान्य
समृद्धि करो पुण्य पुण्य स्वाहा

तिजोरी, कैश बॉक्स या गल्ले में बसने की पुड़िया (पंसारी के यहॉ मिलेगी) लाल कपड़े में बाँध कर रख दें। अब एक थाली में ग्यारह दीपक तेल के जलावें और खीलें हाथ में लेकर कहें'' ॐ दीपेभ्यो नमः ''खीलें दीपकों पर चढ़ा दें। घर में, भगवान के मन्दिर में , रसोई में, सब कमरों में, आँगन, छत, द्वार, नाली के पास, चौराहा, कुँआ, हैण्डपम्प, मन्दिर, पीपल के पेड़ के नीचे आदि स्थानों पर रखें। थाली में सतिया लगाकर तथा फूल डालकर आरती करें।

पुष्पित पारासर
ज्योतिषऋषि, वास्तुऋषि, अंकविशारद
हस्ताक्षर विशेषज्ञ, नजर दोष विशेषज्ञ

धनदायक वास्तु टिप्स

1. ईशान कोण और उत्तर दिशा को साफ स्वच्छ खुला एंव हल्का रखें तो आर्थिक समृद्धि की प्राप्ति होगी। यदि ईशान कोण और उत्तर में कूड़ा कचरा या अनावश्यक सामान हो तो इसे हटाने से धन का आगमन होगा।

2. ईशान कोण में जल से भरा एक स्टील का पात्र अवश्य रखें और सप्ताह में एक बार जल को बदल दें। इससे आर्थिक स्थिति में शुभता प्राप्त होगी।

3. पूर्व या उत्तर दिशा के बीच यदि हल्के व कम ऊंचाई वाले हरे पौधे रखें जायें तो धन समृद्धि दायक हाते है।

4. नैर्ऋत्य कोण और दक्षिण दिशा में बोरिंग या कोई गडढा है तो धन कभी नहीं रूक पायेगा। अतः इस दिशा में कोई गडढा न करें।

5. ईशान कोण या उत्तर दिशा में किया गया बोरिंग भी धनसमृद्धि देने वाला होगा।

6. घर के मुख्य द्वार पर महायंत्र लगाना आर्थिक बाधाओं को पूर्णतः नष्ट करता है।

7. ब्रह्मस्थान (बीच का हिस्सा) को साफ स्वच्छ व खुला रखना भी धन प्राप्ति में सहायक होता है।

8. दीपावली पर आर्थिक समृद्धि हेतु लक्ष्मी पूजा के उपरांत ईशान कोण उत्तर और ब्रह्मस्थान पर एक एक दीया अवश्य जलायें।

9. सभी घडियां और दर्पण उत्तर या पूर्व की दीवार पर लगायें।

10. सूखें हुए फूल व पौधे भी धनागमन में बाधक होते है। इन्हें घर में न रखें।

श्री महालक्ष्मी प्रसन्नता हेतु प्रयोग

1. शनिवार या चतुर्दशी को एक नारियल पर सिंदूर चढ़ाए और कलावे से उसे लपेटकर हनुमान जी के मन्दिर में चढाएं। यह उपाय धनदायक है।

2. प्रत्येक शुक्रवार को महालक्ष्मी के मंदिर में गुलाब के पांच फूल अर्पित करें।

3. प्रत्येक शुक्रवार गुलाब की अगरबत्ती लक्ष्मी जी को चढांए।

4. सात रत्ती का माणिक रत्न सूर्य यंत्र में जड़वाकर सूर्य के सामने रखकर आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ करें अतुल धन की प्राप्ति होती है। लगातार पाठ करें।

5. शुक्रवार को 16 कौड़ियां गंगाजल से धोकर इत्र लगाकर लाल कपड़े में बांधकर धन स्थान पर रखें।

6. अमावस्या के दिन पीपल वृक्ष पर मीठा जल दें एक तेल का दीपक जलाएं तथा एक या तीन माला या 108 बार ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय का पाठ करें।

7. 108 गुंजा शुक्रवार (शुक्ल पक्ष के) को प्रत्येक गुंजा पर **ऊँ महालक्ष्म्यै नमः** का पाठ करें।

दीपावली एक उत्सव

श्री श्री भगवान पाराशर
कर्मकाण्ड महामहोपाध्याय

दीपावली लक्ष्मी गणेश पूजन का उत्सव है। किसी भी प्रकार का धन लक्ष्मी का स्वरूप होता है। इसलिए यह पर्व लक्ष्मी का पर्व है। सम्पूर्ण व्यापारी वर्ग तथा गृहस्थ अपने साल भर का लेखा जोखा करते है। लाभ हानि चिठ्ठा बनाते है। यह पर्व केवल लाभ हानि का चिटठा बनाने तक सीमित नहीं है। वरन इस अवसर पर आर्थिक क्षेत्र में अपनी बुराईयों को छोड़कर अच्छाईयों को ग्रहण करना चाहिए। लक्ष्मी का भोग नहीं सदुपयोग करना चाहिए। लक्ष्मी का सदुपयोग जीवन में साधना का विकास की ओर बढ़ने का सहारा है। कुछ अज्ञानी पुरूष दीपावली पर्व पर लक्ष्मी का प्रयोग जुआ खेलने में करते है तथा सामूहिक रूप से भी जुआ खेलने व शराब का प्रयोग करते है। जिसके कारण परिवार में पर्व के अवसर पर कलह उत्पन्न होता है, सम्पूर्ण परिवार की प्रसन्नता दुख क्लेश में परिवर्तित हो जाती है। कुछ परिवारों में इतने खतरनाक पटाखों का प्रयोग होता है। कि उनसे अनेक अनहोनी घटनायें हो जाती है। जिससे सम्पूर्ण परिवार को दुख झेलना पड़ता है। ये सभी कार्य दीपावली पर्व के विपरीत तो है ही इसके अलावा इन कार्यो में धन का दुरूपयोग भी होता है। इसलिए दीपावली पर्व पर सावधानियां वरतना नितान्त आवश्यक है। हिन्दू संस्कृति में दीपावली मनाने के कई कारण माने गये है। विभिन्न प्रान्त के लोग दीपावली उत्सव अपनी अपनी मान्यताओं के विश्वास से मनाते है। अधिकांश लोगों में मान्यता है कि इस दिन राजा राम वनवास पूर्ण कर अयोध्या में वापिस आये थे इस कारण उनके आगमन पर सभी ने दीपक जलाकर खुशियां मनायी थी, तभी से इस त्यौहार का नाम दीपावली पड़ा। बंगाल में मान्यता है कि इस दिन हमारे पिता पृथ्वी पर हम सबको देखते है तथा बहुत से आर्शीवाद देकर हमें प्रसन्न करते हैं इसीलिये वह लोग छत पर लम्बा बाँस लगाकर उस पर उजाला करते है जिससे हमारे पूर्वज ठीक प्रकार से हमे पृथ्वी पर देख सकें। इस पर्व पर हमें सभी अंधकार रूपी अज्ञान का त्याग कर प्रकाश रूपी ज्ञान की ओर अग्रसर होते हैं लेकिन इसका उपयोग ठीक प्रकार करना चाहिए जिस प्रकार बच्चा अपनी माँ के दूध का प्रयोग करता है हमे लक्ष्मी को मां समझकर उसे अपने जीवन में अपने को समाज को व देश को विकसित व सामर्थ्यवान बनाने के लिए करना चाहिए न कि भोग विलास ऐशो आराम तथा अन्य बुरे कार्यो के लिए। इस अवसर पर लक्ष्मी के रूप में धन की पूजा की जाती है। जो कि तभी सार्थक मानी जायेंगी। जब हम धन का प्रयोग आवश्यकतानुसार करे व उपयोगी कार्यो में ही लगायें, दुरूपयोग न करें। धन न्याय, श्रम और नीति से ही कमायें तथा आर्थिक क्षेत्र में संतुलन बनायें रखें। यही दीपावली उत्सव का संदेश है। गणेश, दीप, गौ द्रव्य, बही खाता कलम एंव दवात व पूजन करना इस पर्व की विशेषताएं है। लक्ष्मी को विष्णु भगवान की पत्नी अर्थात् जगतमाता माना जाता है। लक्ष्मी का सही उपयोग कैसे हो इसके लिए इस पर्व पर लक्ष्मी के साथ गणेश जी का पूजन करते है जो हमें ज्ञान देकर उसका सही उपयोग करना सिखाते है। दीपावली का पूजन करने से पूर्व चौकी पर गणेश लक्ष्मी जी की मूर्ति या चित्र वहीखाता कलम दवात भली प्रकार सजाकर करें व पूजा पूरे परिवार के साथ सामूहिक रूप से करें। ❋❋❋

यंत्रों को पुनः सिद्ध कराने हेतु

भविष्य निर्णय पाठकों के लिये एक सुनहरा अवसर। दीपावली पर गुरु जी (डा. महेश पारासर) द्वारा प्रत्येक वर्ष विशाल हवन किया जाता है जिसमें पुराने यंत्रों को विधिवत रुप से सिद्ध किया जाता हैं। अगर आप भी अपनें यंत्रों को पुनः सिद्ध कराना चाहते है तो भविष्य दर्शन कार्यालय पर सम्पर्क करें। मों. 9719666777, 9557775262

सभी प्रकार के सिद्ध यंत्र, सिद्ध तंत्र सामग्री, असली रत्न की अंगूठी, रुद्राक्ष, रत्न व स्फटिक मालायें आदि उपलब्ध करायी जाती हैं

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562–2856666, 2525262

लक्ष्मी सिद्धि के सूत्र

श्रीमती पूनम दत्त
आगरा

जीवन में लक्ष्मी की अनिवार्यता है, धनी होना मानव जीवन की महान उपलब्धि है, गरीबी और निर्धनता जीवन का अभिशाप मानी जाती है। प्रत्येक व्यक्ति चाहता है। कि वह सपंन्न बने, इसके लिए वह हमेशा प्रयत्नशील रहता है। यहां कुछ बिंदु दिए जा रहे है, जिन्हे जीवन में अपनाएं तो लक्ष्मी जी की असीम कृपा का अनुभव होगा।

लक्ष्मी चंचला है, एक घर में टिक कर नहीं बैठती। आज जो करोड़पति है एक झोंके में दिवालिया बन जाता है, निर्धन लक्ष्मीवान बन जाता है। यह सब लक्ष्मी की चंचल प्रवृति के कारण ही है।

1. लक्ष्मी का एक विशिष्ट स्वरूप है बीज लक्ष्मी। जिसकी साधना करने से महालक्ष्मी के पूर्ण स्वरूप के साथ–साथ जीवन में उन्नति का पथ दृष्टिगोचर होता है।

2. अपने पति हरि विष्णु के बिना लक्ष्मी किसी के भी घर स्थायी निवास नहीं करती है। विष्णु जहां उपस्थित हैं, लक्ष्मी वहां स्थायी निवास करती है। जहां शालिग्राम हो, अनंत महायंत्र हो, शंख हो। शंख शालिग्राम एंव तुलसी मिलाकर लक्ष्मीनारायण की उपस्थिति का वातावरण बनता है।

3. लक्ष्मी को समुद्र की पुत्री माना गया है। समुद्र से प्राप्त विविध रत्न उसके सहोदर है। इनमें प्रमुख हैं दक्षिणावर्ती शंख, मोती शंख, गोमती चक्र, स्वर्णपात्र, कुबेर पात्र, लक्ष्मी प्रकाम्य, क्षीरोद्भव, वरवरद आदि। उनकी घर में उपस्थिति लक्ष्मी देवी को आपके घर, स्थापित होने के लिए विवश कर देती है।

4. लक्ष्मी का नाम कमला है। लक्ष्मी को कमल सर्वाधिक प्रिय है। लक्ष्मी की साधना करते समय कमल पुष्प अर्पित करने पर, कमलगट्टे की माला से लक्ष्मी मंत्र के जप करने पर लक्ष्मी शीघ्र

शेष पेज 19 पर.....

दीपावली पर किए जाने वाले अद्भुत टोटके

पं. अजय दत्ता
ज्योतिष एवं वास्तु परामर्शदाता

दीपावली की रात्रि में लक्ष्मी पूजन करते वक्त ग्यारह कौड़ियां गंगाजल से शुद्ध कर लक्ष्मी जी को चढ़ाएं, हल्दी, कुंकुम लगाएं। अगले दिन कौड़ियों को एक लाल कपड़े में बांध कर तिजोरी में या व्यवसाय स्थल पर रखें। इससे धन की वृद्धि होती है।

1. दीपावली की रात्रि मे पूजन के पश्चात् नौ गोमती चक्र तिजौरी में स्थापित करने से वर्ष भर समृद्धि व खुशहाली बनी रहती है।

2. दीपावली के दिन काली हल्दी लेकर शुद्ध करके धूप दीप दिखा कर, उसके साथ पांच साबुत सुपारियां और पांच कौड़ियां लाल कपड़े में बांधकर दीपावली पूजन में चांदी की कटोरी या थाली में रखें। धूप, दीप, नैवेद्य, से पूजन करें, प्रार्थना करें। रात्रि भर पूजा में रखने के पश्चात् अगले दिन अपनी तिजोरी में रखें, मां लक्ष्मी जी की कृपा बनी रहेगी।

3. घर में धन टिकने के लिए नरक चतुर्दशी के दिन लाल चंदन, लाल गुलाब के पांच फूल और रोली लाल कपड़े में बांध कर, धूप दीप दिखा कर अपनी तिजोरी में रख दें। इस दिन ऐसा करने से घर में धन रूकने लगता है। आप स्वंय आश्चर्यजनक परिणाम देख सकते है। श्रद्धा का होना अति आवश्यक है।

4. श्री धनदा यंत्र की इस दिन पूजा, व स्थापना करें, अति शीघ्र प्रभाव दिखाई देगा। यंत्र स्थापित करके प्रति सोमवार व्रत रखें। प्रतिदिन दर्शन करें, धूप दीप दिखांए। जीवन में कभी धन की तंगी महसूस नहीं होगी। ऋण हो तो वह धीरे–धीरे उतर जाता है। भगवान अदृश्य रूप में सहायता करते है। सुख–समृद्धि आती है। लाभ अवश्य मिलेगा।

5. स्फटिक या अष्टधातु का कछुआ घर में इस प्रकार रखें कि

शेष पेज 19 पर.....

घर, फैक्ट्री, दुकान, शोरूम, हॉस्पीटल, कॉलेज, पेट्रोल पम्प, सिनेमाघर, कोल्ड स्टोरज एवं बड़े आद्योगिक प्रतिष्ठान के वास्तुदोषों का बिना तोड़ फोड़ वैज्ञानिक निवारण एवं आंतरिक साज सज्जा

डॉ. महेश पारासर

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562–2856666, 2525262

श्री सूक्त

पं. विष्णु पाराशर
ज्योतिष शास्त्राचार्य एवं कर्मकाण्ड विशेषज्ञ

हमारे समाज में अर्थ को सर्वाधिक महत्व दिया जाता है। अर्थ के बिना कोई कार्य पूर्ण नहीं होता यह सामाजिक धारणा है। इसलिए मनुष्य नाना प्रकार के यत्न करके अर्थ को जोडने मे लग जाता है। चाहे वो सही है या गलत परन्तु जैसा खाओगे अन्न वैसा होगा मन अतः हम सभी को सात्विक गुणों से अर्थ को कमाना चाहिए इसी क्रम में हम वेदों में से एक सिद्ध प्रसिद्ध सूक्त लेकर आये है। जिसे श्री सूक्त कहते है। लक्ष्मी जी के दो रूप है। एक श्री व दूसरा अलक्ष्मी श्री रूप में माता लक्ष्मी सदा भगवान नारायण के संग बिराजती है और अलक्ष्मी अकेली रहती है। श्री लक्ष्मी जी कमलासन पर स्थित होती है। अलक्ष्मी उल्लू पर सवार रहती है। श्री ही की कृपा से सत्व गुण धन तथा अलक्ष्मी की कृपा से रज व तमस गुणों से युक्त धन।

श्री कृपा का धन पुण्य कार्यो में व्यय होता है और अलक्ष्मी का असत् कर्मो में अतः श्री सूक्त द्वारा श्री लक्ष्मी जजी की उपासना कर सतकार्यो को करे लक्ष्मी जी सदैव आप पर कृपा रखेंगी।

श्री सूक्त का पाठ दीपावली से प्रारम्भ करके नित्य करें लाभ होगा।

हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजत स्त्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो में आ वह।।1।।
तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिंरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरूषानहम्।।2।।
अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम्।
श्रियं देवीमुप ह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्।।3।।
का सोस्मितां हिरण्यप्राकारा मार्द्रा ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोप ह्वये श्रियम्।।4।।
चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।
तां पद्मिनीमीं शरणं प्र पद्ये अलक्ष्मी र्मे नश्यतां त्वां वृणे।।5।।
आदित्यवर्णे तपसोऽधि जातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु या अन्तरा याश्र बाह्याअलक्ष्मीः।।6।।
उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिनां सह।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु में ।।7।।

शेष पेज 18 पर.....

राम की श्री हैं सीता

सुरेश अग्रवाल
आगरा

भगवती सीता भगवान राम चन्द्र जी की शक्ति और राम कथा की प्राण है। जब हम श्री राम कहते है तो उसमें **'श्री'** शब्द **सीता** के लिए बोला जाता है। सीता जी राम की शोभा और क्रिया है। पुत्री, पुत्र वधु, पत्नी और माँ के रूप में उनका आदर्श स्वरूप सामने आता है।

त्रेतायुग में जब भगवान विष्णु ने श्री राम चन्द्र के रूप में राजा दशरथ के यहाँ जन्म लिया तभी भगवती लक्ष्मी भी राजा जनक की राजधानी मिथिला में अवतरित हुई एक दिन राजा जनक खेत जोत रहे थे। एक स्थान पर उनके हल की फाल रूकी, तो देखा फाल के निकट एक घड़े, में कन्या चेतन अवस्था में है। राजा जनक उस कन्या को अपनी पुत्री मानकर, लालन पालन करने लगें। हल की फाल को सीता कहते है। इसलिए उन्होने कन्या का नाम सीता रख दिया।

उपनिषद् में सीता को ही मूल प्रकृति अर्थात् आदिशक्ति स्वीकारते हुए कहा गया है। कि जिसके नेत्र के निमेष उन्मेष मात्र से ही संसार की सृष्टि स्थिति सहांर आदि क्रियाएँ होती है, वे हमारा कल्याण करें। गोस्वामी तुलसीदास से भी राम चरित मानस के प्रारम्भ में ही भगवती सीता को समस्त क्लेशों को हराने वाली कहकर नमस्कार किया है।

पद्य पुराण में सीता जी को जगन्माता और भगवान राम को जगत पिता बताया गया है। श्री राम भगवती सीता को वरण करने के बाद ही विश्व रूप में भासित हो रहे है।

विवाह से पूर्व सीता महाराज जनक की आज्ञा कारिणी पुत्री तथा विवाह के बाद महाराजा दशरथ की अच्छी बहू के रूप में सामने आती है। वे राम चन्द्र जी की सच्ची सहधार्मिणी सिद्ध हुई वनवास के कष्टों की परवाह किए बिना वे पति के साथ वन गमन करती

❋❋❋

यदि आप ज्योतिष एवं वास्तु सम्बन्धित किसी भी समस्या के समाधन की उचित सलाह चाहते हैं। लिखें या ईमेल करें–

ज्योतिष परामर्श शुल्क रु. 500/- वास्तु परामर्श शुल्क रु. 1100/- (मकान का नक्सा आवश्यक)

परामर्श शुल्क ड्राफ्ट/ मनीआर्डर द्वारा निम्न पते पर भेज सकते हैं या महेश चन्द शर्मा के एस. बी. आई, एस. एन. एम. सी. शाखा, आगरा, खाता न. **10039621088**, में जमा करा दे।

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा।
फोन : 0562-2856666, 2525262, 9719005262
E-mail : mail@bhavishydarshan.in

16 अक्टूबर - 15 नबम्बर

मेष (ARIES)- चू, चे, चो, ला, ली, लु, ले, लो, अ- इस माह में धन लाभ होने की संभावना रहेगी। सम्पत्ति संबंधित विवाद होना भी संभव हैं। क्रोध में वृद्धि होने की संभावना रहेगी। अपमान होने का भय रहेगा।

वृष (TAURES) - इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो- धन हानि होने की संभावना रहेगी। कारोबार से लाभ होने की संभावना रहेगी। शत्रु पक्ष प्रबल होगा। पत्नि से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। आय से ज्यादा व्यय करेंगे।

मिथुन (GEMINI)- क, की, कू, घ, ढ़, छ, के, को, हा- इस माह में अर्थ हानि होने का भय रहेगा। पत्नि का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। मित्रों से मेल बढ़ेगा। सन्तानपक्ष अच्छा रहेगा। नई योजनाओं से भी लाभ की प्राप्ति न होगी।

कर्क (CANCER)- ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो- इस माह में स्वास्थ्य ठीक रहेगा। सम्पत्ति संबंधित विवाद होना भी संभव हैं। आय से व्यय अधिक होगें। धन हानि होने की सभांवना रहेगी। नेत्र रोग भी सभंव हैं। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी।

सिंह (LEO)- मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे- इस माह में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शत्रुओं पर आप हावी रहेंगे। यात्रा का सुख प्राप्त होगा। मानसिक तनाव से ग्रस्त रहेगें। शुभ समाचार की प्राप्ति होगी। कार्य में निरन्तर लाभ की प्राप्ति होगी।

कन्या (VIRGO)- टो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो- पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। मास के अन्त में हानि होने की संभावना रहेगी। नई योजनायें बनायेंगे। निजीजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। भाइओं के साथ मन-मुटाव की स्थिति बनेगी।

तुला (LIBRA)- रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते-इस माह में हानि होने का भय लगा रहने की संभावना रहेगी। प्रियजनों का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। आय से ज्यादा व्यय करेंगे। शत्रु पक्ष प्रबल रहेगा। पत्नि सुख से लाभ होगा।

वृश्चिक (SCORPIO)- तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू- इस मास में स्वास्थ्य खराब होने का भय रहेगा। स्थान परिवर्तन का विचार बनेगा। घरेलू परेशानियाँ खत्म नहीं होगी। भाईयों को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी।

धनु (SAGITTARIUS)- ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे- इस माह में वायु रोग होने की संभावना रहेगी। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। विवादों से दूर रहें। नई योजनाओ से हानि होने की संभावना रहेगी।

मकर (CAPRICORN)- भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी- पत्नि सुख से लाभ होगा। निजीजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। कार्य मे निरन्तर लाभ की प्राप्ति होगी। शत्रु से परेशानी होने की संभावना रहेगीं। मानसिक तनाव से बचें।

कुम्भ (AQUARIUS)- गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा- इस माह में आर्थिक हानि होने की संभावना रहेगी। भाइयों को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। नेत्र रोग से ग्रस्त रहने की संभावना रहेगी। आय से ज्यादा व्यय करेंगे। मानसिक तनाव से बचें।

मीन(PISCES)- दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची- कारोबार में लाभ हाने की स्थिति बनेगी। पत्नि से शुभ फलों की प्राप्ति होगी। नई योजनाओं से लाभ की प्राप्ति होगी। नेत्र रोग से ग्रस्त रहने की संभावना रहेगी। मित्रों का पूर्ण सहयोग मिलेगा। नौकरी मे निरन्तर लाभ की प्राप्ति होगी। शत्रु से परेशानी होने की संभावना रहेगीं।

पुष्पित पारासर
ज्योतिषऋषि, वास्तुऋषि, अंकविशारद
हस्ताक्षर विशेषज्ञ, नजर दोष विशेषज्ञ

भारतीय अन्य पर्व त्यौहार

अक्टूबर	नवम्बर
19.रमा एकादशी व्रत **21.**प्रदोष व्रत, धन तेरस (धनवन्तरी जयंती) **22.**नरक चौदश **23.**अमावस्या, श्री महालक्ष्मी पूजन (दीपावली) **24.**श्री गोवर्धन पूजा (अन्नकूट) **25.**भाई दूज 27 श्री विनायक चौथ **28.**पाण्डव पंचमी **29.**सूर्य षष्ठी **30.**जलराम जयंती **31.**गोपाष्टमी, श्रीमती इंदिरा गांधी पुण्य दिवस, सरदार बल्लभ भाई पटेल जयंती	**1.** अक्षय नवमी **3.** देव प्रबोधिनी एकादशी व्रत, तुलसी विवाह **4.** प्रदोष व्रत, गुरुण द्वादशी (उड़ीसा) **6.** बैकुण्ठ चौदस **10.** श्री गणेश चतुर्थी व्रत **14.** पं. जवाहर लाल नेहरू जन्म दिवस, बाल दिवस, काल भैरवाष्टमी

ग्रहारम्भ मुहूर्त

अक्टूबर–नही है।**नवम्बर**– 5,

गृह प्रवेश मुहूर्त

अक्टूबर– नही हैं।**नवम्बर**– 5

दुकान शुरू करने का मुहूर्त

अक्टूबर– 26, 30

नवम्बर– 3, 5,

नामकरण संस्कार मुहूर्त

अक्टूबर– 23, 26, 30

नवम्बर– 2, 5, 9, 13

सर्वार्थ सिद्ध योग

अक्टूबर	नवम्बर
16 ता. प्रातः 06:18 से 19 ता. 06:15 तक 22 ता. प्रातः 06:21 से रात्रि 02:36 तक 31 ता. प्रातः 06:27 से रात्रि 12:52 तक	04 ता. 06:30 से सायं 06:23 तक 06 ता. 06:31 से दोपहर 03:42 तक 08 ता. दोपहर 02:29 से 09 ता. प्रातः 06:28 तक 10 ता. प्रातः 06:34 से दोपहर 03:31 तक 13 ता. प्रातः 06:36 से रात्रि 09:41 तक

मासिक राशिफल

16 नबम्बर - 15 दिसम्बर

मेष (ARIES)- चू, चे, चो, ला, ली, लु, ले, लो, अ-इस मास में स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। अच्छे लोगों से मेल सूत्र जुड़ेंगे। मास के अन्त में स्वास्थ्य अधिक खराब रहेगा। अपमान होने का भय रहेगा।

वृष (TAURES) - इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो– इस मास में स्वास्थ्य खराब रहेगा। मास के अन्त में शुभ रहेगा। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। व्यवसाय ठीक रहेगा। घरेलू परेशानी निरन्तर लगी रहेंगी।

मिथुन (GEMINI)- क, की, कू, घ, ढ़, छ, के, को, हा– व्यापार में धन हानि होने पत्नि का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। शत्रु प्रबल रहेंगे। परेशानी होने की संभावना रहेगी।

कर्क (CANCER)- ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो– इस मास में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। अर्थ लाभ होकर भी हानि होने का भय रहेगा। जमीन-जायदाद संबंधित परेशानी लगी रहेंगी। यात्रा में कष्ट से बचें।

सिंह (LEO)– मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे– इस मास में स्वास्थ्य खराब रहेगा। मित्रों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगा। शत्रुओं की वृद्धि होने की संभावना रहेगी। घरेलू परेशानी निरन्तर लगी रहेंगी।

कन्या (VIRGO)– टो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो–इस मास में आप शत्रुओं पर हावी रहेंगे। योजनाओं से लाभ होगा। पत्नि का पूर्ण सुख प्राप्त होगा।इस माह में स्वास्थ्य ठीक रहेगा। यात्रा होना भी संभव है।

तुला (LIBRA)– रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते– इस मास में वायु विकार संबंधी कारोबार में लाभ होने की संभावना रहेगी। अर्थ हानि होने की संभावना रहेगी। यात्रा में कष्ट से बचें। रोग का भय रहेगा। मास के अन्त में लाभ की प्राप्ति होगी।

वृश्चिक (SCORPIO)- तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू–इस माह मे धनहानि होने की संभावना रहेगी। घरेलू परेशानी निरन्तर लगी रहेंगी। प्रियजनों का सुख प्राप्त होगा। सन्तानपक्ष अच्छा रहेगा। शत्रु प्रबल होंगे।

धनु (SAGITTARIUS)- ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे- भाइयों का सुख प्राप्त होगा। माता को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। व्यवसाय या नौकरी में बदलाव होने की संभावना रहेगी। सन्तानपक्ष अच्छा रहेगा।

मकर (CAPRICORN)- भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी– पुत्र को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। अपने कार्य से आपको लाभ की प्राप्ति होगी। यात्रा में कष्ट होना भी संभव है। निजीजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

कुम्भ (AQUARIUS)- गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा- इस माह में स्वास्थ्य ठीक रहेगा। धन लाभ होने की संभावना रहेगी। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। जमीन-जायदाद संबंधी परेशानी कम होंगी। मास के अन्त में शुभ रहेगा।

मीन (PISCES)- दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची- इस माह में प्रियजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। स्वास्थ्य श्रेष्ठ रहेगा। धन लाभ होने की संभावना रहेंगी। परन्तु मास के अन्त मे आपको राज भय रहेगा। यात्रा में कष्ट से बचें।

पुष्पित पारासर
ज्योतिषऋषि, वास्तुऋषि, अंकविशारद
हस्ताक्षर विशेषज्ञ, नजर दोष विशेषज्ञ

भारतीय अन्य पर्व त्यौहार

नवम्बर	दिसम्बर
18.उत्पत्ति एकादशी व्रत 19.इंदिरागांधी जं. 20.प्रदोष व्रत 22.अमावस्या व्रत 23.श्री सांई बाबा जयंती 25.श्री विनायक चतुर्थी व्रत 28.चम्पा षष्ठी, स्कन्द षष्ठी 29.दुर्गाष्टमी 30.हरि नवमी, गुरु घासी दास जयंती	1.विश्व एड्स डे 2.मोक्षदा एकादशी व्रत, गीता जयंती 3. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जन्म दिवस, विकलांग दिवस 4.प्रदोष व्रत, भा. नौ सेना दि. 6.पूर्णिमा व्रत, श्री दत्तात्रोय जयंती 7.भारतीय झण्डा दिवस 9.सौभाग्य सुन्दरी व्रत 10.श्री गणेश चतुर्थी व्रत, मानवाधिकार दि. 14.कालाष्टमी व्रत 15. सरदार पटेल पु. दि.

ग्रहारम्भ मुहूर्त
नवम्बर–27
दिसम्बर–1,6

गृह प्रवेश मुहूर्त
नवम्बर– नही है। दिसम्बर – 1,6

दुकान शुरू करने का मुहूर्त
नवम्बर–27
दिसम्बर – 1,3,6,7,

नामकरण संस्कार मुहूर्त
नवम्बर– 20
दिसम्बर – 1

सर्वार्थ सिद्ध योग

नवम्बर	दिसम्बर
19 ता. 06:41 से 11:01 तक 28 ता. 06:48 से 29 ता. प्रातः 6:14 तक	06 ता. प्रातः 06:57 से रात्रि 11:38 तक 11 ता. प्रातः 06:57 से 12 ता. प्रातः 06:00 तक 14 ता. 14:55 से 15 ता. प्रातः 06:57 तक

शेष पेज 7 से आगे.....

ऊँ हिरण्यवर्णा हरिणीं सुवर्ण रजतस्त्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह।।

महर्षि भृगु के 29 मंत्रो का यह सूक्त ऋगवेद के श्री सूक्त के रूप में विख्यात है। उन्होने लक्ष्मी से कहा जो ब्राह्मण या साधक इस सूक्त का विधि पूर्वक पाठ एंव हवन करेगा, वहाँ अनिच्छा से भी आपका वास होगा। जो ब्राह्मण भक्ति पूर्वक इसका पाठ व हवन करेगा, वह कभी भी श्रीदीन नही होगा, उसका घर धन–धान्य एंव वैभव से भरा पूरा होगा। दीपावली की रात को इसका पाठ एंव एंव हवन सतोगुणी लाभप्रद होगा। इस सूक्त के हवन से घर में शांति एंव समृद्धि दोनों बची रहेगी।

महर्षि भृगु के इस स्तुति गान से भगवती लक्ष्मी अति प्रसन्न हुई उनका क्रोध शांत हुआ और वे महर्षि के चरणों में अपना शीश नवाने लगी। महर्षि ने अपनी पुत्री को उठाकर प्यार से गले लगाया और कहा तुम्हारा क्रोध अकारण नहीं था परंतु यह क्रोध सूक्त के अवि भाव का कारण बना। अतः हे पुत्री। तुम इस सूक्त का पाठ करने वालों के शांति, समृद्धि एंव वैभव का वरदान देना। इतना कहकर महर्षि अंर्तध्यान हो गए। माता लक्ष्मी अभी भी विष्णु जी को पंखा झल रही थी और वे विश्रामरत थे। लक्ष्मी जी उन पलों में अतीत की घटनाओं को जी चुकी थीं। वे उस अतीत को भी जी चुकी थीं कि उनके पिता महर्षि भृगु एंव माता ख्याति तथा भ्रातात्रय–धाता व विधाता उन्हे कितना स्नेह करते थे। पितामह दक्ष की तो वे लाडली थीं। पितामह उन्हें भार्गवी कहकर पुकारते थेः क्योकि उन्होने भृगपुत्री के रूप में अवतार लिय ा था।

भगवान विष्णु के अधखुले नयन खुलने लगे। उन्होने लक्ष्मी जी को किसी स्मृति में खोया पाया। तब उन्होने कहा हे देवी। किस स्मृति में इतना खो गई कि आपको अपना भी ध्यान नही रहा विष्णु जो की भी इस बात से वे किंचित चौंकी एंव सहज हो गई। विष्णु जी ने आगे कहा आप अनन्य प्रिया हैं। आप हमारी प्रत्येक अवतार लीला की सहचरी हैं। हमारे विष्णु नामक अदित्य में आप कम लोडवा पद्या के नाम से विख्यात हुई है। श्री राम की लीला में सीवा एंव श्री कृष्ण की लीला में आप ही रूकिमणी होकर अवतीर्ण हुई थी। इसी बीच श्री कृष्ण अपनी रूकमणि जी के साथ बैकुंठ पधारे। प्रद्युम्न की माता रूकमणी जी लक्ष्मी जी को देखकर भाव विभोर हो उठीं। उन्होने लक्ष्मी जी से पूछा हे देवी अपना रहस्य प्रकट करें। लक्ष्मी जी ने कहा मैं सभी देवियों की शक्तियों की मूल महालक्ष्मी हूँ। सारा विश्व प्रपंच मुझसे अभिचल हुआ है। स्थूल–सूक्ष्म, दृश्य–अदृश्य, व्यक्त, अव्यक्त, सभी मेरे ही रूप है। मैं ही सच्चिदानंदमयी परमेश्वरी हूँ। मैं नित्य सनातन हूँ फिर भी लीला के लिए अनेक रूपों में प्रकट होती रहती हूँ। भक्तों पर अनुग्रह करने के लिए परम्, दिव्य, चिन्मय सगुण रूप से सदा विराजमान रहती हूँ। मैं स्वर्ग में स्वर्ग लक्ष्मी, राजाओं की राजलक्ष्मी, घरों में गृहलक्ष्मी वणिक जनों के यहाँवाणिज्य लक्ष्मी तथा युद्ध में विजेताओं के पास विजय लक्ष्मी के रूप में विचरण करती हूँ। समस्त शुभ लक्षणों के कारण मेरा नाम लक्ष्मी हैं मैं ही महर्षि भृगु की पत्नी ख्याति के गर्भ से अवतीर्ण श्री हूँ और में श्री भगवान विष्णु की धर्म पत्नी हूँ। लक्ष्मी जी के इस रहस्य को जानकर अति प्रसन्न हुई रूकमणी ने कहा हे देवी दीपावली से आपका घनिष्ठ संबंध हैं। कृपा करके दीपावली की रात्रि के रहस्य से हमें अवगत कराऐं लक्ष्मी जी ने कहा दीपावली की रात्रि विशिष्ट रात्रि हूँ। इसे काल रात्रि के नाम से जाना जाता है। यदि प्रातः काल चतुर्दशी को एंव रात्रि को अमावस्या हो तो इसका महत्व बढ़ जाता है। इस रात्रि में लोक लोकांतर से धरती पर दिव्य आत्माओं का आवागन होता है। यक्ष, गंधर्व आदि मनुष्य शरीर धारण करके मृत्युलोक में इस रात्रि में विचरण करते है। मैं स्वंय इस रात्रि को विभिन्न रूपों में विद्यमान रहती हूँ। मै सद्गृहस्थों के घरों में निवास करती हूँ। रूकिमणी जी ने फिर पूछा हे देवी आप किन किन स्थानों पर रहती हैं स्वंय देवी लक्ष्मी बताती है मै उन पुरूषों के घरों में सतत निवास करती हूँ जो सौभाग्य शाली निर्भीक, सच्चरित्र तथा कर्तव्यपरायण है। जो अक्रोधी, भक्त, कृतज्ञ, जितेंद्रिय तथ सतोगुणी है। जो स्वभावत जिस धर्म कर्तव्य तथा सदाचरण में सदा तत्पर रहते है धर्मज्ञ और गुरूजनों की सेवा में सतत निरत रहते है मन को वश मे रखने वाले क्षमाशील और सामर्थ्यशील है। इसी प्रकार उन स्त्रियों के घर मुझे प्रिय है जो क्षमाशील जितेंद्रिय सत्य पर विश्वास रखने वाली है तथा जिन्हे देखकर सबका चिन्त प्रसन्न हो जाता है। जो शीलवती, सौभाग्यवती, गुणवती, पतिपरायणा, सबका मंगल चाहने वाली तथा सद्गुण संपंन्न होती है।

(महाभारत अनुदान धर्म पर्व 11/6)

यह सब सुनकर हर्षित होकर रूकिमणी जी ने आगे कहा हे देवी भगवती कृपा करके दीपावली की पूजन विधि बताकर हमे कृतार्थ करें। भगवती मुस्कराई और बोलीं– दीपावली के दिन ब्रह्म मुहूर्त मे उठकर, दैनिक कृत्यों से निवृत हो कर पितृजन तथा देवताओं का पूजन करें संभव हो तो दिन भर उपवास कर गोधूलिवेला (संध्या समय) अथवा वृष, सिंह, वृश्चिक आदि लग्न में श्री गणेश–कलश षोड़श मातृक एंव ग्रह पूजनपूर्वक भगवती लक्ष्मी का षोड़शोपचार पूजन करें। इसके पश्चात महाकाली का दवात के रूप में महास्वरस्वती का कलम –बहीं आदि के रूप में तथा कुबेर का तुला के रूप में सविधि पूजन करें। भगवती ने आगे स्पष्ट किया इसी समय दीप पूजन कर यमराज तथा पितृगणों के निमित्त ससंक्लप दीपदान करें। तत्पश्चात घर द्वार, बाग बगीचे स्नानागार चौराहा आदि स्थानों पर एंव नदियों में और तेल पूर्ण प्रज्वलित दीप रखें। तुलसी, चौराहा, मंदिर, गंगोत्तरी आदि में घी के दीपक जलाएं। भगवती की पूजा वेदी की रचना करें तथा उस पर रक्ताभ अष्टदल कमल बनाकर लक्ष्मी की मूर्ति स्थापित करें। पूजन के पश्चात् प्रदक्षिणा कर भगवती को पुष्पांजलि समर्पित करें। आधी रात के बाद घर की स्त्रियाँ सूप आदि बजाकर अलक्ष्मी (दरिद्रा) का निस्सारण करें। इस विधि से भक्तिभाव पूर्वक पूजन करने से में प्रसन्न होकर इच्छित वरदान देकर कृतार्थ करती हूँ। इस सबको सुनकर प्रसन्न मन से रूकिमणी भगवान श्री कृष्ण के साथ द्वारकापुरी लौट आई। भगवती अपनी ही अभिन्नस्वरूप रूकिमणी से वार्त्तालाप करके अति प्रसन्न थी। अब उनके मन मे स्मृति का कोलाहल शांत हो चुका था और वे भगवान विष्णु के साथ प्रसन्तापूर्वक चर्चा कर रही थी। बड़ी विलक्षण है उनकी महिमा।

❋❋❋

शेष पेज 14 से आगे.....

क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वा निर्णुद मे गृहात्।।8।।
गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोप हये श्रियम्।।9।।
मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यश।।10।।
कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम।
श्रियं वासय से कुले मातरं पद्ममालिनीम्।।11।।
आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च देवी मातरं श्रियं वासय मे कुले।।12।।
आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह ।।13।।
आर्द्रां यः करिणीं यष्टि सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरणमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह ।।14।।
तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो
दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरूषानहम्।।15।।
यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्।
सूक्तं पंच्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्।।16।।

❋❋❋

दरिद्रता विनाशक उपासना

यह उपासना दिपावली के दिन करने से ही लाभप्रद होता है। इस उपासना मै निम्न सागग्री चाहिए। कुशा का आसन, ताम्रपात, श्री फल, गंगाजल, चकला केसर, कमल पुष्प, धूप दीप, मिष्ठान, दक्षिणा, मूंगे की माला, गोमुखी, उपासक कुशा के आसन पर पुर्वाभिमुख होकर बैठ जाबे सामने ताम्रपात पर श्री फल को रख उस पर गंगाजल में केसर घिसकर अपना जन्म नाम व प्रसिद्ध नाम दोनो को केसर से लिख दें पुनः गंगा जल से स्नान करायें। स्ननोप्रान्त केसर का टिका लगाकर कमल पुष्प चढायें व धूप व दीप दिखाकर मिष्ठान का भोग लगायें। दक्षिणा चढाकर इस

ऊँ क्रीं तालिके दारिद्र विनासिने हूँ फट्।''

मंत्र की 11 माला का जाप मूंगे की माला से गोमुखी में डालकर करें। जब मंत्र जाप पुरा हो जावे तब उपासक स्वंय उस श्री फल को दक्षिणा के सहित गरीब भिखारी को दान दे दें। इस प्रकार दरिद्रता दान में चली जाती है। और उपासक के घर किसी प्रकार का अभाव नहीं रहता। धन प्राप्ति के योग बनने लगते है। सांसारिक जीवन आन्नद पूर्ण बन जाता है।

पं. ब्रजकिशोर शर्मा ब्रजवासी
भागवताचार्य

मेवाड़ विश्वविद्यालय व **अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ**
के संयुक्त तत्वाधान में
ज्योतिष तंत्र शिक्षा प्रसार समीति, आगरा
के अंतर्गत करें
4 वर्षीय इंटिग्रेटेड पोस्ट ग्रेजुएशन एवं पीएच. डी.
आवश्यक शैक्षणिक योग्यता - स्नातक (ग्रेजुएशन)
अथवा स्नातकोत्तर (पोस्ट ग्रेजुएशन)

देय राशि	₹ 75000/- प्रति वर्ष
विवरण पत्रिका	₹ 500/-
प्रवेश परीक्षा शुल्क	₹ 1000/-

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष एवं वास्तु शिक्षण संस्थान
भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, एम. जी. रोड़, आगरा। मो. 9557775262, 9719666777

शेष पेज 06 से आगे .....

1. परिवार की स्त्री प्रातः स्नान कर चावल की खीर बनायें। उसमें घी व मेवा डालें। खीर के ग्यारह भाग करें पहला गाय, दूसरा कन्या, तीसरा बालक, चौथा चिड़ियों, पाचवां कौये, छठा कुत्ता, सांतवा मन्दिर, आंठवा छत, नवां तुलसी दसवां बिल्ली, ग्यारवां पीपल को अर्पित करें। धर्म ग्रन्थों में इन सभी में श्री लक्ष्मी का वास लिखा गया है।

2. दीपावली के दिन गुड की भेली घर में लाये उस पर 21 स्वास्तिक उस पर बनायें। एक नारियल भेली पर रखें। मन से उनका पूजन करें। गुड व नारियल में लक्ष्मीजी व गणेश जी का वास होता है।

3. लक्ष्मी जी को स्थायी रूप से रोकने के लिये घर में स्फटिक श्री यन्त्र की स्थापना करें व कमल गटटे की माला से लक्ष्मी जी के मन्त्रों का जाप करें। श्री सूक्त का पाठ करने से भी मां लक्ष्मी की कृपा सदैव घर में बनी रहती है।

4. इस दिन सिद्ध उल्लूक यन्त्र की स्थापना एंव पूजन घर में करने से वर्ष भर मां लक्ष्मी का वास घर में ही हो जाता है क्योकि उल्लू श्री लक्ष्मी जी का वाहन है।

5. सर्वकार्य सिद्ध यन्त्र, व्यापार वृद्धि यन्त्र की स्थापना भी इसी दिन करी जाती है। इसके चमत्कारिक परिणाम तभी प्राप्त होते है। जब यन्त्र विधिवत् रूप से सिद्ध किये हों व आपके द्वारा इसकी स्थापना सही प्रकार से व सही मूर्हूत मे की गयी हो।

6. इस दिन लक्ष्मी पोटली या धन पोटली की स्थापना पूजन स्थल पर करें व दौज के पश्चात् इसे तिजोरी में रख दें। वर्ष भर आपकी तिजोरी भरी रहेगी।

7. इस दिन जो दीपक जलायें उसमें मौली का प्रयोग करें। लक्ष्मी जी को लाल वस्त्र एंव गणेश जी को पीले वस्त्र वस्त्र चढाने का नियम है। लक्ष्मी जी को घर की बनी हुई खीर का भोग लगायें।

8. पूजन के पश्चात् प्रत्येक कक्ष में शंख व घंटियां बजायें। इससे सकारात्मक उर्जा का प्रवाह होता रहेगा।

9. इस दिन विष्णु स्हस्त्र नाम का भी पाठ अवश्य करें।

10. पूजा स्थल पर आम के पत्तों का वन्दनवार लगायें। अशोक के वृक्ष के भी पत्ते उसमें लगायें। बरगद के पत्ते भी उसमें लगायें। बरगद के पत्तों पर हल्दी से व अशोक पर सिन्दुर से श्रीं व आम के पत्ते पर रोली से ऊँ लिखें। पूजा के बाद वर्ष भर के लिये इन्हें धन स्थान पर रखें।

11. मां लक्ष्मी के चरणों में लालू हकीक रखें। पूजा के बाद इन्हे धन स्थान पर रख दें।

गोवर्धन पूजा- गोवर्धन पूजा से परिवार में धन धान्य की वृद्धि होती है व शनि ग्रह की पीडा से मुक्ति मिलती है। शनि ग्रह से पीडित व्यक्ति गोबर से बने गोवर्धन के बायें तरफ तेल का दीपक जलायें। उन्हें नमस्कार करें व शनि ग्रह की पीडा दूर करने की प्रार्थना करें। यह शनि ग्रह की शान्ति का यह अचूक उपाय है। ध्यान रहे तेल में चुटकी भर हल्दी अवश्य डाल दें।

भाई दौज- इस दिन बहने भाई की लम्बी उम्र की दुआ करते हुये उनके मस्तक पर मंगल तिलक करती है। अपने भाईयों की दीर्घ आयु के लिये व्रत कर यम की पूजा करती है। इस दिन भाइयों का बहन के घर भोजन करने का बडा महात्मय है। इससे उन्हें यम के भय से मुक्ति मिलती है। इस दिन यमुना नदीं में स्नान व दीपदान का भी महत्व है। सुन्धा होने से पूर्व गोधूली की बेला में। दीपावली की पूजा उठ ली जाती है। लक्ष्मी यन्त्र धन पोटली धन स्थान में रख दें। धर के पूजारी को प्रसाद व दक्षिणा दे। कनकधारा यन्त्र एंव कनकधारा पोटली सर्वत्र आभूषणों व रसोई घर में स्थापित करें व नजर पोटली मुख्य द्वार पर स्थापित करें। उपरोक्त उपायों से आप वर्ष भर मां लक्ष्मी की कृपा एंव आर्शीवाद प्राप्त कर सकते है। ❋❋❋

शेष पेज 13 से आगे.....

प्रसन्न होती है।

5. लक्ष्मी का आगमन वहां होता है। जहां पौरूष हो, जहां उद्यम हो, जहां गतिशीलता हो। उद्यमशील लोगों के जीवन में लक्ष्मी, गृहलक्ष्मी, संतान लक्ष्मी, आयुलक्ष्मी, श्री लक्ष्मी विभिन्न रूपों में प्रकट होती है। प्रत्येक माह के शुक्ल पक्ष की पंचमी को श्री सूक्त के पद का पाठ करते हुए कमल गटटे के एक बीज और शुद्ध घी की हवन में आहुति देना फलदायक होता है।

6. लक्ष्मी के बड़े अनुष्ठानों की अपेक्षा छोटी लक्ष्मी साधनाओं, मंत्र जप घर पर प्राण प्रतिष्ठित यंत्र की स्थापना आदि से जीवन में अनुकूलता शीघ्र आती है।

7. लक्ष्मी प्राप्ति के लिए श्री यंत्र, कनकधारा यंत्र और कुबेर यंत्र समन्वय से एक पूर्ण क्रम स्थापित होता है।

8. पारद निर्मित प्रत्येक विग्रह अपने आप में सौभाग्यदायक होता है। चाहे वह पारद लक्ष्मी हो पारद शंख हो अथवा पारद श्री यंत्र पारद शिवलिंग और पारद गणपति में भी लक्ष्मी तत्व समाहित होता है। ❋❋❋

शेष पेज 13 से आगे.....

उसका मुंह अंदर की ओर हो। इसे दीपावली के दिन लाना और रखना समृद्धिदायक होता है। काली हल्दी भी विशेष स्थान रखती है। उसे तिजोरी में इस दिन स्थापित करने से धन में वृद्धि होती है। इनमें लक्ष्मी को खीचनें की असीम शक्ति होती है। विष्णु सहस्रनाम का पाठ और लक्ष्मी सूक्त की कैसेट प्रातः से अवश्य चलाएं इससे वातावरण धार्मिक बनता है। लक्ष्मी प्राप्ति के अवसर प्राप्त होते हैं और कर्ज धीरे–धीरे दूर होने लगता है।

कार्य सिद्धि के लिए

श्री यंत्र, धनदा यंत्र या कार्यसिद्धि यंत्र की स्थापना भी दीपावली के दिन अत्यंत कल्याणकारी व लाभकारी होती है। इनकी स्थापना पूजन दर्शन से लाभ निश्चय ही प्राप्त होता है। कार्य सिद्धि होते है, बाधाएं स्वतः ही दूर होने लगती है। पाठक स्वंय अनुभव कर सकते है। ❋❋❋

पूजा के यंत्र-तंत्र-रुद्राक्ष सामिग्री

पूजा की सामिग्री

मालाऐं (रूद्राक्ष, स्फेटिक)

रूद्राक्ष माला
रूद्राक्ष माला (मध्यम)
रूद्राक्ष माला छोटे दाने
रूद्राक्ष- स्फटिक माला
स्फटिक माला छोटी
स्फटिक माला बड़ी
लाल चंदन माला, हल्दी की माला
कमल गट्टे की माला

स्फटिक सामग्री

स्फटिक श्री यंत्र
स्फटिक लक्ष्मी, स्फटिक गणेश
स्फटिक शिव लिंग
स्फटिक बॉल बड़ा
स्फटिक बॉल छोटी

मिश्रित सामिग्री

नवरत्न ब्रेसलेट
नवरत्न ब्रेसलेट (मध्यम)
नवरत्न अंगूठी
काले घोड़े की नाल असली
काले घोड़े की नाल का छल्ला
श्वेतार्क गणपति
इंद्रजाल, बृहमजाल
गोमती चक्र, नाभि चक्र

शंख

दक्षिणावर्ती शंख (स्पेशल)
दक्षिणावर्ती शंख मध्यम
गणेश शंख एवं लक्ष्मी शंख

सभी तरह के लॉकेट (चांदी में)

सिद्ध सर्वकार्य भौतिक सुख कवच
सिद्ध विघ्न विनाशक रक्षा कवच
सिद्ध महामृत्युंजय -शत्रु नाशक कवच
सिद्ध रत्नजडित कालसर्प लॉकेट
सिद्ध कालसर्प लॉकेट चांदी में
सिद्ध सरस्वती यंत्र-रक्षा कवच
सिद्ध श्री यंत्र-रक्षा कवच सहित
सिद्ध शत्रु नाशक-रक्षा कवच सहित
सिद्ध शत्रु नाशक-टोटके नाशक
सिद्ध टोटके नाशक-रक्षा कवच

रूद्राक्ष

सिद्धएकमुखी (गोल दाना)
सिद्धएकमुखी (काजू दाना)
सिद्ध तृतीय नेत्र रूद्राक्ष
सिद्ध गौरी शंकर रूद्राक्ष
सिद्ध गर्भ गौरी रूद्राक्ष
सिद्ध दो मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध तीन मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध चार मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध पांच मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध छः मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध सात मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध आठ मुखी रूद्राक्ष

पारद सामग्री

पारद शिव लिंग, पारद श्री यंत्र

पिरामिड

पिरामिड (पीतल)
पिरामिड छोटे (पीतल)
कार पिरामिड
स्टडी टेबल पिरामिड

तांत्रिक वस्तुयें

तांत्रिक नारियल
तांत्रिक पत्ता सुपाड़ी
गऊ लोचन
एकाक्षी नारियल

फेंगशुई

मेगनेट ब्रासलेट, समृद्धि पेड़
लाफिंग बुद्धा, क्रिसटल बॉल
ग्लोब, पिरामिड शुभ-लाभ
लुक, फुक, साहू
लवबर्ड, कछुआ
तीन टांग का मेंढ़क

भविष्य दर्शन के नाम से ड्राफ्ट या मनीआर्डर भेजकर प्राप्त कर सकते हैं। 500 रूपये या अधिक का सामान वी.पी. पी. द्वारा भी मंगा सकते हैं।

सभी प्रकार के सिद्ध यंत्र, सिद्ध तंत्र सामग्री, असली रत्न की अंगूठी, रुद्राक्ष, रत्न व स्फटिक मालायें आदि उपलब्ध करायी जाती हैं

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562-2856666, 2525262